अध्याय - 2

मेहरून्निसा परवेज़: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

साहित्य के क्षेत्र में एक विशिष्ट पहचान रखने वाली लेखिका है 'मेहरून्निसा परवेज', समकालीन महिला लेखिकाओं में उनका स्थान अग्रण्य है। मेहरून्निसा परवेज का जीवन सीधा-सरल ना होकर अनेक उतार-चढ़ाव एवं संघर्षमय रहा है । उसके बावजूद अपनी विपरीत परिस्थितियों से लड़कर अपने व्यक्तित्व की अलग पहचान बनाई है । लेखिका ने जीवन की व्याख्या इस प्रकार की है " छोटे-छोटे दुखों में रो लेना और छोटे-छोटे सुखों में मुस्कुरा लेना, इसी का नाम जिन्दगी है। जो इस मंत्र को जान ले, समझ लें और इसे ताबीज बनाकर अपने में रख लें तो जानिये वह संसार का सबसे धनी और अमीर है।"[1] इनकी रचनाएँ काल्पनिक ना होकर अपने आस-पास की जिंदगीयों और अनुभूतियों के माध्यम से लिखा है। उन्होंने अपने साहित्य में नारी हृदय की संवेदनशीलता के हर पहलू को अपने साहित्य का विषय बनाया है। जो इनके कथा साहित्य में देखने को मिलता है । अपने लेखन के प्रति निष्ठा पूर्वक समर्पित एवं सक्रिय हैं । साहित्य और समाज उनके जीवन की प्रेरणा है। यही कारण है कि एक संपन्न परिवार में जन्म लेने के बावजूद यह मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग के सभी पहलुओं विपन्नता, गरीबी, उनका पिछड़ापन, अंधविश्वास, भोलापन जीवन के कटु-मधुर,उतार-चढ़ाव, यथार्थ, धूप-छांव सभी को सहजता से ग्रहण किया है। उनकी लेखनी से स्पष्ट हो जाता है कि उनका हृदय कितना विशाल और विनम्र है।

मेहरून्निसा परवेज जी ने साहित्य की कई विधओ में साहित्य सर्जन किया है। उपन्यास, कहानी तथा अन्य साहित्य के साथ-साथ 'समरलोक पत्रिका' का संपादन तथा प्रकाशन कर रही हैं। साहित्य सर्जन के साथ समाजसेवी का भी कार्य करती रही है। मेहरून्निसा परवेज़ के व्यक्तित्व और कृतित्व को जानने समझने के लिए उनके समग्र जीवन का परिचय तथा साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन करना आवश्यक है।

जन्म तथा नामकरण

मेहरून्निसा परवेज़ का जन्म 10 दिसम्बर 1944 को मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले के बहेला नामक ग्राम में एक इस्लामी परिवार में हुआ। इनके जन्म की कहानी थोड़ी अजीब है। उनके पिता उन दिनों बहला मध्यप्रदेश में थे, माँ को 'गोदिया' में रखा गया था। उनके यहां रिवाज़ के मुताबिक पहले बच्चे का जन्म मायके में होता है, इसलिए मामा, माँ को लेने आये थे। उन दिनों आज की तरह गाड़ी मोटर नहीं हुआ करते थे, बैलगाड़ी से ही सफर किया जाता था। माँ को एक दाई के साथ बैलगाड़ी में बैठाकर मामाजी ले जा रहे थे, मामा जी आगे-आगे घोड़े पर चल रहे थे, और पीछे-पीछे बेलगाड़ी चल रही थी। शाम के समय रास्ते में आम गाँव की नदी पार कर किनारे आई तभी रोने की आवाज आती है, दाई ने बैलगाड़ी में ही प्रसूति करवा दी। गाड़ी वाले ने बैल गाड़ी खड़ी कर मामा को खबर किया। मामा आए तो दाई ने बताया बेटी हुई है बेटी। "इनका जन्म चलती बैलगाड़ी में यात्रा के दौरान हुआ। फिर उन्हें और इनकी माता को वापस गाँव ले जाया गया और मुस्लिम परंपरा के अनुसार एक मौलाना ने इन्हें गोद मे उठाकर इनके कान में अजान दी और इनका नामकरण यह कह दिया कि पहले इतिहास में एक महान महिला नूरजहाँ का जन्म इसी ढंग से हुआ है। जिसका वास्तविक नाम मेहरुन्निसा था, इस प्रकार उस मौलाना ने इनका नाम भी मेहरुन्निसा रखा।"[2] अर्थात इनके माता पिता को पत्री के रुप में सारे जहां का नूर मिल गया।

इनका जन्म नदी पार करते समय हुआ इसलिए इनके गाँव के लोग इन्हें 'नदीया' नाम से पुकारते ये खुद बताती हैं - "मुझे आज भी गाँव के लोग 'नदीया' के नाम से जानते हैं। यदि आप मेरे गाँव या गाँव के अगल-बगल जाइए तो 'मेहरुनिस्सा' बोलने से नहीं पहचानते, अगर आप 'नदीया' बोलते हैं तो सब जान् जाएँगे नदीया फूफी, नदीया खाला, नदीया बाजी आदि। सब नदीया ही बोलते हैं, क्योंकि मेरा जन्म 'वैनगंगा' नदी पर हुआ था।"[3]

माता - पिता

मेहरुन्निसा परवेज़ जी के पिता अब्दुल हमीद खान तथा माता शहजादी बेग़म थी। उनके माता पिता के संदर्भ में हम कह सकते हैं - "लेखिका के पिता ए.एच.खान उच्च शिक्षा प्राप्त प्रशासनिक विभाग में अधिकारी थे। पिता काबुल -पठान और माँ स्व. शहजादी बेगम मुगल घराने से थी। उनकी ददिहाल मध्यप्रदेश के बघेला! (बालाघाट) गाँव में है और ननिहाल महाराष्ट्र के गोंदिया (नागपूर) में है। अपनी प्रगतिशील विचार धाराओं के कारण पिता पर्दा-प्रथा और धार्मिक कट्टरपन का विरोध किया। पिता का रहन-सहन और आचरण व्यवहार पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित था, इसलिए सामंतवादी मुस्लिम परिवार में जन्म लेने के बवजूद भी नदीया ने धार्मिक ब्राह्माडंबरों को प्रधानता नहीं दी।"[4] मेहरुन्निसा परवेज़ जी की माँ मुगल घराने से थी। वे गोल-मटोल खूबसूरत जिंदादिल महिला थीं। अपनी बेटी की हर हरकत पर ध्यान देती थी गाँव की होने के कारण उनमें दकियानूसीपन बिल्कुल नहीं था, वे बहुत सीधी-सादी, खुले विचारों के साथ ही साधारण व्यक्तित्व की थीं। सौतेली माँ तथा सौतेले भाई-बहनों के साथ रहने के कारण उन्हें बहुत कष्टो-दुःखो का सामना करना पड़ा था। अपने माता पिता के बारे में बातचीत करते समय कहती हैं - "मेरे माता पिता दोनो ही बहुत अच्छे थे। मैं दोनों की बहुत प्यारी थी, और दोनों की ही दोस्त थी, परन्तु मैं कभी भी माता की बात पिता से और पिता की बात माता से नहीं कहीं। दोनों मुझे बहुत विश्वास पात्र मानते थे। मेरे पिता जी जज थे, नौकरी में थे। पिता से मैंने प्रशासन की बातें सीखीं और माँ से मैंने ममता तथा घर की बातें सीखीं। मेरी माँ और पिता में बहुत अन्तर था। मेरे पिता मॉरीश कॉलेज, नागपुर के पढ़े हुए थे और मेरी माँ सिर्फ उर्दू चौथी क्लास पढ़ी थी। बहुत सीधी-साधी थी।"[5] परवेज़ जी अपने माता पिता को भगवान मानती हैं। वे बताती है कि मैं बड़ी भाग्यशाली हूँ कि मुझे माता-पिता दोनों सदाचारी विचार वाले मिले थे। उनकी सभी के साथ अच्छी मित्रता थी। अन्य जाति के लोगों से खूब प्रेम भाव, बंधुता थी, उन्ही के संस्कारों का नतीजा है कि वह खुद दूसरी जाति के परिवार में अच्छे से रज बस गयी हैं।

बचपन

मेहरुन्निशा परवेज़ जी का बचपन सुखमयी बीता। क्योंकि वह अपने माता-पिता की एक लौती संतान थी। परवेज़ जी अपने पिता के बारे में कहती हैं "हम लोग दोनों बाप-बेटी तो रहे ही बहुत अच्छे दोस्तों में रहें,यानी मेरी ऐसी कोई चीज जो उनसे छुपी हो, ऐसा कभी नहीं रहा, चाहे वह कितनी भी गोपनीय बात हो वह सब जानते थे और उनकी हर बात मै जानती थी।"[6] मेहरुन्निशा परवेज़ को एक लौती बेटी होने का भरपूर स्नेह अपने माता-पिता से मिला। आज वह जो कुछ भी हैं, उन्हें उनके माता-पिता की सिख और प्रेरणा की बदौलत मिला, किंतु माता पिता के वैचारिक भिन्नता के कारण उनमें अक्सर कहा-सुनी हो जाती थी जिसका असर परवेज़ जी पर भी होता था। इसी से इन्हें कभी-कभी दुखों का भी सामना करना पड़ता था, कहते हैं। ना कि बच्चे माता-पिता को एक सूत्र में बांधे रखते हैं जिसके कारण वह चाह कर भी कभी अलग नहीं हो पाते, वैसे ही अपने माता-पिता को जोड़ने वाली कड़ी वह खुद थी। मेहरून्निसा परवेज़ का बचपन भिन्न-भिन्न शहरों गाँव में व्यतीत हुआ। क्योंकि उनके पिता सरकारी अफसर थे। लेकिन मुख्य रूप से उनका बचपन मध्यप्रदेश के आदिवासी बस्तर जिला में गुजरा। इस संदर्भ में 'मेरे बस्तर की कहानियाँ' संग्रह की भूमिका में लेखिका लिखती है कि "बस्तर ! जिसे मैं कभी भूल नहीं पाई। जिंदगी का पहला पाठ यथार्थ का पहला शब्द मैंने यहीं गढ़ा था। बस्तर की माटी में खेलकर मेरे नन्हें पैर जवान हुए थे बस्तर का वह भयानक जंगल आज भी मेरे मन में बसा है, जंगली फूलों की भीनी गंध आज भी थके दिमाग को तरोताजा करती है।"[7] इस तरह मेहरुन्निशा परवेज़ का बचपन सुख-दु:ख तथा खट्टी-मीठी यादों के साथ गुजरा।

शिक्षा

मेहरुन्निशा परवेज़ बहुत अधिक पढ़ी-लिखी नहीं है। वह करती है मेरी पहली शिक्षक मेरी माँ है। जिससे मैंने दु:ख को समझा भावनाओं को समझा और हर बात को समझने लिखने की प्रेरणा मुझे अपनी माँ से मिली। पिता के बार-बार तबादले तथा कम उम्र में निकाह हो जाने के

कारण परवेज़ जी अधिक पढ़ाई नहीं कर सकी। ये खुद कहती हैं कि मेरी पढ़ाई का तो ऐसा रहा कि मेरे पिताजी जहाँ-जहाँ रहें, वहाँ-वहाँ मैंने पढ़ाई की, कभी-कभी मैंने एक ही कक्षा में दो-दो जगह पढ़ाई की। पहले बहुत जल्दी-जल्दी ट्रांसफर होता था। अधिकारियो कि संख्या बहुत कम थी। छः माह एक जगह में पढ़ाई की तो छः माह बाद दूसरी जगह ट्रांसफर कर देते थे। मैंने बहुत छोटी-छोटी स्कूलों में पढ़ाई की है। गाँव में रहकर भी बहुत दिन पढ़ाई की हैं। हम ही झाड़ू लगा लेते थे, पट्टी बिछा लेते थे, तो इस तरीके से पढ़ाई हुई थी। जल्दी शादी भी हो गई लेकिन मैंने प्राइवेट कोर्स के माध्यम से अपनी शिक्षा स्नातक तक पूरा किया। शिक्षा में रुकावट का कारण शादी थी। उनके घर में इतना पर्दा था कि किसी घर में जाती नहीं, यदि जाती है तो खुल नहीं सकती। टाँगा-रिक्शा वाले को पहले दूर भेज देते थे, फिर घर के लोग उस पर चादर बाँधते थे तब उसे बुलाते थे, की आओ, चलाओं। मेरे पिता पदाधिकारी थे इसलिए मेरे घर में पर्दा प्रथा नहीं था। इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि जिस घर मे पर्दा प्रथा को इतनी कट्टरता से पालन किया जाता हो उस परिवार की बहू-बेटी कितना पढ़ पायेगी या आगे बढ़ेंगी। उसके बावजूद अपनी शिक्षा पर संतोष करते हुए कहती हैं - "मुझें इतनी तालीम मिली कि मैं अपना साहित्य लिख सकती हूँ, और इतनी भी तालीम नहीं मिली कि मैं अपनी जिंदगी के लिए नौकरी कर सकती थी, सरकारी नौकरी जिसको कहा जाये।"[8] बचपन मे व्याकरणिक शिक्षा कठिन जरूर थी, लेकिन उन्होंने रट्टू तोते की तरह रट लिया था। जिससे उनके जीवन में नियमबद्ध आचरण विकास हुआ। व्याकरणिक शिक्षा का स्मरण करते हुए परवेज़ जी कहती हैं - "बचपन में व्याकरण पढ़ना कितना कठिन लगता था, बस एक रट्टू तोते की तरह कंठस्थ कर लेती थी, परंतु आज समझ में आता है कि उसी व्याकरण ने ही हमें अनुशासन की प्रक्रिया सिखाई थी अर्धविराम, विराम, मात्राओं की पहचान, हलंत के भेद आदि ने तराश-तराशकर अनुशासित बनाया। बचपन के उस कठिन पाठ ने ही तो जीवन को संतुलित किया। बचपन में बात-बात पर रोनेवाला मन अब बड़े तूफान को किसी खूबी से झेल जाता है।"[9] नामुमकिन कार्य को मुमकिन बनाने का उनका सफल

प्रयास आज भी कायम है। मेहरुन्निशा परवेज़ जी की पन्द्रह वर्ष की आयु में विवाह होने से पढ़ाई छूट गयी। उस समय तक उन्होंने नौवीं क्लास तक पढ़ाई की थी। फिर इन्होंने महारानी लक्ष्मीबाई कन्या विद्यालय जगदलपुर में हायर सेकेण्डरी तक शिक्षा प्राप्त की बादमें टुकड़े-टुकड़े करके एम. ए तक की पढ़ाई पूरी की।

वैवाहिक जीवन

30 अक्टूबर 1959 में रऊफ परवेज़ के साथ 15 वर्ष की आयु में विवाह हुआ। जो मेहरुन्निशा परवेज़ जी से पंद्रह-बीस साल उम्र में बड़े थे। उनकी माँ की जिद के कारण यह शादी हुई थी क्योंकि उनका मानना था कि मुस्लिम परिवारों में बढ़े-लिखें लड़के बहुत कम मिलते हैं। राउफ परवेज़ वकील थे साथ प्रसिद्ध शायर भी थे। प्रगतिवादी पिता ने शादी का विरोध किया।लेकिन माँ की जिद के सामने पिता हार गये। ससुराल के लोग कट्टर मुसलमान थे। लेखिका कहती हैं - "शादी के बाद मुझे एकदम विपरीत कट्टर मुसलमान परिवार में जाना था। पहली बार हम दोनों रायपुर गए, तब ससुर ने कहा, 'बहू को दहेज में सब कुछ दिया गया, पर बुरका सिला देना' मैं सर से पैर तक काँप गई बुरका ? वही बुरका जिसे बरसों पहले, जब अम्मी अब्बा के घर आयी थीं, तब अंग्रेजी तहजीब में पले हुए अब्बाजान ने बड़ी ही बेरहमी से, बड़ी ही बेदर्दी से जलवा दिया था। ऐसे कट्टर लोगों के खिलाफ लड़ने के लिए अपने को तैयार करना था। इनके उसूलों को तोड़ने के लिए बेहया, बेशर्म, बेगैरत जैसी उपाधियाँ लेनी पड़ी। और वह भी जब घर के नौ भाई-बहनों और माँ-बाप का भार अकेले इन पर शादी के बाद लाद दिया गया था। मैं इन दुनियादार बातों को नहीं समझती थी।"[10] शादी के कई शालों तक कोई बच्चा ना होने के कारण उन्हें बहुत सी परेशानियों को झेलना पड़ा। सन् 1970 में बेटे 'सलीम' के जन्म से उन्होंने अपने उपर से 'बाँझ' जैसे कलंक को दूर किया। किन्तु कुछ सालों बाद उनका दाम्पत्य जीवन टूट गया। परवेज़ जी ने दूसरी शादी अपनी मर्जी से अलग जाति और धर्म से ऊपर उठकर 18 दिसम्बर, 1978 को आई.ए.एस ऑफिसर भागीरथ प्रसाद के साथ की। प्रसाद जी तलाकशुदा तथा दो

बेटियों के पिता है। अंतरजातीय विवाह करने में पिता ने पूरा सहयोग दिया। अलग धर्म में विवाह करने के बाद मुझे बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। क्योंकि यहाँ पर एक आदमी पढ़ा-लिखा है, बाकी सब अंगूठा छाप किसान हैं। इनकी और मेरी सोच में बहुत अन्तर आ जाता है। "मैंने तो आज तक उनके (भागीरथ प्रसाद) के यहाँ मटके को भी हाथ नहीं लगाया। बहुत सारी विसंगतियाँ थी। नाम भी बदलने को बोल रहे थे। मैंने कहा नहीं नाम तो नहीं बदलूँगी क्योंकि उस समय मेरी चौदह किताबें आ चुकी थीं। इन्होंने साथ दिया, फिर धीरे-धीरे सब सही हो गया। हम लोगों के बीच बहुत झगड़े हुए होंगे लेकिन धर्म को लेकर कोई मतभेद नहीं रहा क्योंकि यह भी मार्क्सवादी विचारधारा के हैं।"[11] इनमें कोई संदेह नहीं की परवेज जी का जीवन सुख सुविधाओं से भरपूर जीवन मिला। किंतु यह भी सत्य है कि परिवारिक जीवन में खुशी, शान्ति, सहयोग की कमी हमेशा रही। पहला विवाह अत्यंत संघर्ष मयी रहा, बाद में जाकर कुछ बदलाव आया। अपने दु:ख व संघर्ष के बारे में उन्होंने लिखा है कि "मैंने गरीबी और अमीरी दोनों में केवल पीड़ा ही पीड़ा देखी है। यह सच है, मानसिक क्लेश, यातना जितनी मन को थकाती है उतना कष्ट शायद शरीरिक तकलीफ से भी नहीं होता। जिंदगी में मिले हादसे इंसान को मैच्योर बनाते हैं, ऊपर उठाते हैं, गिराते नहीं न! फिर इनसे क्यों मुंह मोड़ना?"[12]

मेहरुन्निशा परवेज के दूसरे पति डॉ. भागीरथ प्रसाद भिंड (ग्वालियर) के रहने वाले हैं। उन्होंने समाजशास्त्र में पी.एच.डी की उपाधी प्राप्त है। मध्यप्रदेश कैडर के 1975 बेच के आई.ए.एस रहे हैं। वे कर्मठ और अनुशासनप्रिय अधिकारी माने जाते है। नौकरी के पश्चात दो साल तक इंदौर के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे। राजनीतिक महत्वाकांक्षा के चलते वे कुलपति का पद छोड़कर कांग्रेस में शामिल हुए और भीड़ से 2009 में लोकसभा का चुनाव लड़े, लेकिन हार गये। 2014 के लोकसभा चुनाव में पुनः भीड़ से उतरे लेकिन इस बार भाजपा में शामिल हो गए और विजई रहे। अपने पति के स्वभाव तथा कार्यकुशलता के विषय में परवेज़ जी कहती हैं "एक उच्च अधिकारी का अहम और बड़प्पन उन्हें मुझे दिखाई नहीं दिया।

उनकी सादगी और सज्जनता ने उन्हें शहर भर में बहुत लोक प्रिय बना दिया ।"[13] मेहरुन्निशा परवेज़ जी ने 8 अक्टूबर 1979 को एक नन्ही परी को जन्म दिया जिसका नाम 'सिमाला प्रसाद' रखा गया । सिमाला मध्य प्रदेश कैडर के 2010 बैच की आई.पी.एस है, और समर पत्रिका के लिए चित्रों का चयन भी करती हैं । निपुण एवं अच्छे संस्कारों की है । सिमाला के बाद परवेज़ जी ने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम 'समर' रखा गया । किन्तु 18 वर्ष की आयु में समर का देहान्त हो गया । बेटे की मृत्यु ने परवेज़ जी को भीतर से तोड़ कर रख दिया । वे कहती है । "मेरे जीवन की सर्वाधिक दु;खद घटना मेरे बेटे की मौत है ।... मुझे सर्वाधिक खुशी बच्चों के जन्म से मिली ।"[14] मेहरुन्निशा परवेज़ जी को अब एक छोटा बेटा है जिसका नाम 'समीर' है । जो स्नातक की पढ़ाई कर चुका है । वास्तव में मेहरुन्निशा परवेज़ जी को परिवारिक जीवन में बहुत ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है । लेकिन मौजूदा स्थिति बदल गयी है । अब वह अपने पति और बच्चों के साथ अपना सुखद परिवारिक जीवन बिता रही हैं । परिवार के सदस्यों के प्रति उनके मुँह से निकले अपनेपन, स्नेह भरे शब्द इस बात की गवाही देते हैं ।

व्यक्तित्व एवं अभिरुचियाँ

साहित्यकार के व्यक्तित्व की स्थायी छाप उनकी कला पर परिलक्षित होती हैं । "व्यक्तिगत शब्द का प्रयोग व्यक्ति के शरीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों के सुसंगठित और गत्यात्मक संगठन के लिए किया जाता है । जिसे वह अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन के आदान-प्रदान में व्यक्त करता है ।"[15] अपने जीवन में व्यतीत की गयी अनुभूतियों के क्षण, यथार्थ के विविध रूप आदि सर्जन के प्रभावित अंग हैं । जिन संस्कारो में व्यक्ति विकसित होता है । उसी के अनुसार व्यक्तित्व का विकास होता है । डॉ.मीना जोशी के अनुसार " व्यक्तित्व की पहचान व्यक्ति की रूचियों, स्वभाव और आदतों से होती है । सृजन और परिवेश के माध्यम से व्यक्तित्व को जाना जा सकता है । व्यक्तित्व की पहचान तो व्यक्ति के भीतर

जो व्यक्ति बैठा हुआ है, उसे समझने में होती है। जिस परिवार, वातावरण और संस्कारों में व्यक्ति विकसित होता है उसी के अनुरूप व्यक्तित्व का विकास होता है।"[16]

श्रीमती मेहरुन्निशा परवेज़ जी की बड़ी-बड़ी आँखे गोर रंग, लंबे घने बाल, तेज नाक, उनकी मिश्री- घुली आवाज, भोलापन, जिसका चेहरा देखते ही निश्छलता टपकती है। इस संदर्भ में कहा जा सकता है। "सूति कलफ की हुई बंगाली साड़ी हाथों में एक-एक चूड़ी, कपाल की थोड़ा सा अपने दामन में लेते हुए सीधी खड़ी हुई माँग वाले बाल जो पीछे जाकर मात्र एक कबरी में थे, गेहुआँ रंग से गौर की तरफ एक दो कदम बड़ा सा रंग, पैरों में चप्पल ... बहुत ही शालीन सी मुद्रा में काफी आईस्ता आवाज में किसी शख्स से बतिया रही थी।"[17] इसी तरह परवेज़ जी का बाहरी व्यक्तित्व भी बड़ा सरल शीतल है जो बहुत आकर्षित करता है। मेहरुन्निशा परवेज़ में आदर्श भारतीय नारी के गुण मिलते हैं। भारतीय संस्कृति के प्रति अपनत्व रखने वाली लेखिका है। इस संबंध में डॉ.विश्वनाथ अय्यर लिखते हैं "श्रीमती मेहरुन्निशा परवेज़ के सौजन्यपूर्ण व्यवहार और अकादमिक चर्चा में उनका योगदान इस शिबिर की विशेष उपलब्धि रही। उनके आदर्श भारतीय नारी का शांतिप्रिय व्यवहार प्रभावशाली था धीमी आवाज में शिष्टतापूर्ण बातें, उनका क्रम यही था।"[18]

मेहरुन्निसा परवेज़ जी का लेखन के अतिरिक्त भी विभिन्न रुचियॉ रही है। स्कूल के दिनों में गायिका बनना चाहती थी, वह आज भी लतामंगेश्वर की आवाज में हू-ब-हू गा लेती है। उनकी रुचि खेल-कूद में भी थी। किन्तु परिवार में अति अनुशासन और कट्टर माहौल में कुछ संभव नहीं हो सका। लेखन तो मेरा दूसरा विकल्प था, क्योंकि यह बिना किसी के भनक लगे किया जा सकता है। परवेज़ जी साहित्यिक एवं समाजिक कार्यों में तटस्थ रहने के बावजूद गृहस्थी की सभी बातों पर ध्यान देती है। सलीके से कपड़े पहनना, घर सजाना, सुंदर रंगों का चयन करना, खाना बनाना उन्हें बहुत पसंद है। साथ ही उन्हें मेहमान नवाजी का भी बहुत शौक है। उन्हें जितना

दूसरों को खिलाने में आनंद मिलता है । उतना खुद खाने में नहीं मिलता । इनका अपनत्व, मिलनसार स्वभाव, परोपकारी व्यवहार किसी को भी इनके समीप लाकर खड़ा कर देता है।

लेखन प्रेरणा

मेहरुन्निशा परवेज़ को लेखन की प्रेरणा उनके माता-पिता से मिली है। पिता बस्तर में जज मजिस्ट्रेट के पद पर कार्यरत थे । अदालत के फैसले वे अपने हाथ से लिखते थें, उन्हें स्टेनो से लिखवान पसंद नहीं था। एक बार उनके दाहिने हाथ पर फालिज का असर हो गया था। इसलिए वे अपने अदालत के सारे फैसले मेहरुन्निशा जी से लिखवाते थें । फैसले बहुत लंबे साठ-सत्तर पन्ने के होते थे । परवेज़ जी उस समय पांचवीं कक्षा में पढ़ती थी और बड़े धैर्य से अदालत के फैसले लिखा करती थीं। वह कहती हैं "यह एक विचित्र घटना है कि जाने-अनजाने में यह कलम मेरे जज पिता ने ही मुझे पकड़ाई थी।...मैं बड़े धैर्य से उनका काम करती थी । फैसले लिखने से मुझे कई फायदे हुए। एक तो मुझे केस लिखना और बनाना आया । पात्रों को समझना आया । हालात को समझना तथा मुलजिम की मानसिकता को परखना आया । सही बात की तह में उतरना आया।

दो वर्ष बाद अब्बा तो ठीक हो गए पर मैं बेकार हो गई । अब मैंने अपने आस-पास को पढ़ना शुरु कर दिया । इस तरह से इत्तेफाकन मैं लेखक बन गई। फैसले लिखना मेरे लिए वरदान रहा । लेखक तो बनी तथा दफ्तर का काम करना भी आ गया जो बाद में सरकारी काम करने में सहायता रहा । लेखन मुझे पिता को दिया पारितोषक है ।"[19] लेखिका के जीवन में लेखन कार्य की पहली सीड़ी पिता थे।

फिर मैं अपने आस-पास की घटनाओं को देखती और उसे लिख देती, और क्लास में अपनी सहेलियों को सुनाया कारती थीं। एक लड़की ने अपने घर जाकर बताया तब उसके पिता ने मुझे बुलवाया और मेरे हाथ में धर्मयुग पत्रिका पकड़ा दी और कहा जब लिखती हो तो इसमे

भेजना, क्या पता तुम्हारा भी छप जाये। उस समय मेहरुन्निशा जी नौंवी कक्षा में पड़ रही थीं। उन्होंने पत्रिका छुपाकर रख दिया, पत्रिका के पीछे लिखे पते पर अपनी एक कहानी भेज दी। इस प्रकार उनकी पहली कहानी 1963 में छपी थी। जब पिता को पता चला कि तुम्हारी बेटी की कहानी पत्रिका में छपी है। तो मैं बहुत डर गयी थीं। लेकिन पिता ने मुझे बुलाया और पूछा कि तुम्हारी कहानी छपी है। तो मैं कुछ कह नहीं पायी, सर झुकाकर खड़ी थी। पिता ने कुछ नही कहा और उस दिन के बाद फिर कभी कुछ नहीं पूछा। परिवार में उपन्यास कहानी पढ़ना मना था वहीं मेहरुन्निशा परवेज़ जी ने गागर में सागर भर दिया।

परवेज़ जी ने साहित्यिक सफर की शुरुवात कहानियों से की है। उनकी पहली कहानी 'जंगली हिरणी' धर्मयुग पत्रिका में अक्टूबर 1963 में छपी। उनकी दूसरी कहानी 'पाँचवी कब्र' कहानी की चर्चित पत्रिका 'नई कहानियाँ' में छपती रही। लेखन की शुरुवात करदिया फिर पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। उन्होंने जो भी लिखा अपने आस-पास के जीवन की घटनाओं को देख, परख, सोच समझ कर लिखा। उनके आस-पास पात्रो की कमी नहीं थी और सबकी अपनी अलग कथा, अलग परिवेश, अलग परेशानिया थी जिसे मुझे लगता की इसके बारे में लिखना चाहिए जबतक लिखती नही तब तक वह अन्दर ही अन्दर बेचैन किया करते थे। मेहरुन्निशा परवेज़ अपने कथा साहित्य के पात्र वास्तविक जीवन से जुड़े हुए है, और उन्होंने अपनी लेखनी से सभी पात्रो के साथ न्याय किया है। वे अपने माता-पिता दोनों को अपने लेखन प्रेरणा का स्रोत मानती हैं - "मैं अपने पिताजी से बहुत ज्यादा प्रभावित रही और शायद लेखन शक्ति जो है, मुझे उनसे ही प्राप्त हुई। मेरी कहानियों में जो दर्द मिलता है उस दर्द से पहचान माँ ने कराई। दर्द का गुरुमंत्र मुझे माँ ने दिया और इस दर्द को मैंने हर जगह से ढूँढ निकाला।"[20]

सामाजिक कार्य

मेहरुन्निशा परवेज़ एक सर्जनात्मक लेखिका है। उनकी लेखनी में जो समाज की छोटी से छोटी समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता देखने को मिलती है। वहीं उनके तटस्था सामाजिक

कार्यों में भी देखने को मिलती है। अधिकतर उन्होंने आदिवासी और बिछडी महिलाओं की सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु कार्य किए हैं। 1975 -77 को वे बस्तर के बाल एवं शिशु कल्याण बोर्ड अध्यक्ष रहीं है। सन् 1977 में बस्तर जिले की ओर से समाज कल्याण बोर्ड मध्य प्रदेश की कार्यकारिणी सदस्य थी। परिवार प्रगति परियोजना (भोपाल), राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (मुंबई) मध्यप्रदेश बैंकिंग सेवा भर्ती बोर्ड (1991-93), सन् 1994 में 'वमोदय' महिला संगठन की अध्यक्ष रही हैं। डॉ.अम्बेडकर शोध संस्थाओं (महू), मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी आदि कई संस्थाओं की सदस्य के रुप में वे जुड़ी है। इस प्रकार परवेज़ जीने अपने आप को साहित्यिक तथा सामाजिक कार्यो में निष्टापूर्वक समर्पित कर दिया है।

पुरस्कार एवं सम्मान

वर्ष 2005 में मेहरुन्निशा परवेज़ को तत्कालीन राष्ट्रपति ए पी जे अब्दुल कलाम द्वारा " पद्मश्री " से सम्मानित किया गया। सन् 1980 में मध्यप्रदेश शासन द्वारा उनके 'कोरजा' उपन्यास पर 'अखिल भारतीय महाराजा वीर सिंह जुदेव' राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया है। कोरजा उपन्यास को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान,लखनऊ द्वारा भी उपन्यास को सम्मानित किया गया है। सन् 1995 में हिंदी साहित्य सेवा के लिए उनके योगदान पर उन्हें उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण सम्मान' से अलंकृत किया गया। सन् 1995 में 'ढ़हता कुतुबमीनार' कहानी संग्रह को 'सुभद्रा कुमारी चौहान' पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन् 1995 में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की एक सौ पच्चीसवीं वर्षगांठ समारोह समिति द्वारा समाज सेवा के लिए उन्हें सम्मानित किया गया। सन् 1999 में राष्ट्रभाषा की स्वर्ण जयंती पर छटवें विश्व हिंदी सम्मेलन (लंदन) में हिंदी भाषा एवं साहित्य सेवा के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया गया। 'भारत भूषण सम्मान' जून, 2003 में प्राप्त हुआ। सर्वक्षेष्ठ साहित्यिक पत्रिका 'समरलोक' के सुसंपादन के लिए 19 जून 2003 को 'श्री रामेश्वर गुरू पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

उल्लेखनीय वृद्धि

पद्मश्री मेहरुन्निशा परवेज़ का साहित्य उर्दू, अंग्रेजी, मलयालम, गुजराती, पंजाबी, मराठी, उड़िया आदि भाषाओं में अनुवादित किया गया है। सामाजिक समस्याओं पर उनकी कहानियाँ तथा साक्षात्कार दूरदर्शन और अन्य विविधायामी माध्यमों से प्रसारित किये गयें हैं। उनकी लंबी कहानी 'जूठन' पर आधारित 'सिल्ली' नामक धारावाहिक दिल्ली दूरदर्शन से प्रसारित हुआ। भारत के विश्वविद्यालयों में उनके साहित्य पर अनेको शोधार्थी पीएच.डी. की उपाधि से गौरवान्वित हुए हैं। इसमें सामंती अनीति एवं सामाजिक विषमताओं का प्रभावपूर्ण चित्रण है। उन्होंने वैश्यावृत्ति जैसे विपदा, अभिशाप पर स्वयं टेलीफिल्म 'लाजो बिटिया'(1997) और स्वतंत्रता संग्राम पर आश्रित लोकप्रिय धारावाहिक 'वीरांगना रानी अवंतीबाई'(1998) का निर्माण एवं निर्देशन किया है। वर्ष 1995 में करारे शरीफ में हिंसा के समय वे गाँधी शांति मिशन के मंच पर साम्प्रदायिक सद्भावना का पैगाम लेकर कश्मीर पहुँची। उन्होंने फ्रांस, लंदन, रूस आदि का दौरा कर कई सम्मेलनो में हिस्सा लिया है। वे साहित्य और समाजसेवा में हमेशा कार्यकारिणी रही हैं।

सभी धर्मो के प्रति आस्था

मेहरूनिशा परवेज़ जी सभी धर्मो के प्रति आस्था रखती हैं। वे मंदिर और मस्जिद दोनों जगह जाती हैं। नारी को उन्होंने लक्ष्मी,दुर्गा का अवतार माना है। वे दीवाली और ईद दोनों ही तेहवारों को धूम-धाम से मनाती है। उन्होंने ने खुद अंतर्जातीय विवाह किया है, वे हिंदू देवी देवताओं की भी पूजा करती हैं। इस विषय में दिनेश द्ववेदी कहते हैं - "मैं आवाक् रह गया.... मुझे संकोच खाते देख हंस दी। हम लोग मंदिर गए। बाजी ने गाड़ी से उतरने के साथ ही सर पर पल्ला ले लिया। नारियल-चिरौंजी खरीदी.... बहुत ही अदब के साथ मंदिर की देहरी को हाथ से छूकर माथे से लगाया था.... तब कहीं अंदर प्रवेश किया। माथे पर पुजारी ने कुंकुम का तिलक लगाया- प्रसाद चढ़ाया,परिक्रमा की और प्रणाम कर जब हम बाहर आए तो बाजी का चेहरा उस

कुमकुम की तलाई से एकदम नई आभा बिखेरता लग रहा था। सर का पल्ला घर तक कायम रहा।"[21] परवेज़ जी कबीर दर्शन से बहुत प्रभावित हैं। मीरा बाई की कृष्ण भक्ति और उनके प्रेम को निराला माना हैं। वे अलग-अलग धर्मग्रन्थों को पढ़ने में आस्था रखती हैं और एक ही दिन में पूरी किताबें पढ़ती हैं।

सद्गृहणी

मेहरुन्निशा परवेज़ एक कामयाब साहित्यकार होने के साथ ही एक सफल गृहिणी है, जो अपने परिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी ईमानदारी से निभाती हैं। अपने लेखन के लिए उन्होंने कभी भी अपने पारिवारिक दायित्वों को नजरअंदाज नहीं किया। रात का वक़्त वो अपने परिवार के साथ बिताती है। परिवार के दायित्व निर्वहन से जब समय मिलता है तब वह लेखन करती हैं। वे अपने लेखन के बारे में कहती हैं - "मैंने लेखन के लिए आडंबर नहीं रचा। मिटटी के चूल्हें के पास बैठकर खाना पकाते में लिखा, बच्चे को दूध पिलाते में लिखा, घर के शोर में लिखा।"[22] निश्चित ही हम कह सकते हैं कि मेहरुन्निशा परवेज़ जी एक सफल गृहिणी है।

समाजसेवी

मेहरून्निसा परवेज़ जी ने समाज सुधार के केवल नारे ही नहीं लगाएं बल्कि समाज के कमजोर, पीड़ित लोगों की परिस्थिति सुधारने के लिए दृढ़ कार्य भी किए हैं। विविध ओहदो पर कार्य करते हुए उन्होंने निस्वार्थ हृदय से परोपकार किया है। वर्ष 1974 में वे बस्तर जनपत की बाल और परिवार कल्याण योजना की अध्यक्ष रहीं। उसके बाद वर्ष 1977 में वे बस्तर से मध्य प्रदेश समाज कल्याण की योजना से जुड़ी। बस्तर से ही मध्य प्रदेश समाज कल्याण मंडल की सदस्य के रूप में आदिवासी स्त्रियों के अधिकारों के प्रति जागरूकता एवं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए विभिन्न प्रयास किए। उन्होंने बस्तर में रुकमणी देवी आश्रम की स्थापना में कड़ी मेहनत कर एक सशक्त महिला विकास केंद्र के रूप में उसे उन्नत किया। वे राज्य

बैंकिंग भारतीय बोर्ड तथा आकाशवाणी की कार्यकारी समिति की सदस्य रह चुकी हैं । वर्ष 1993 से वर्ष 1996 तक तीन साल संयुक्त मध्यप्रदेश में पिछड़ा वर्ग आयोग की सभासद रहीं हैं। मध्यप्रदेश के राज्यपाल की अध्यक्षता में गठित 'मध्यप्रदेश महात्मा गांधी ट्रस्ट' कि वह न्यायकर्ता हैं । वह राज्यपाल के प्रतिनिधि के रूप में डॉ आंबेडकर शोध संस्था, महू की कार्य समिति की सदस्य भी रह चुकी हैं । बरकत उल्ला विश्वविद्यालय भोपाल में भी वह कार्य समिति की सदस्य हैं। वह समाज कल्याण, महिला एवं बाल विकास, हिंदी, उर्दू भाषाओं की उन्नति, दुर्बल वर्गों आदि की उन्नति के लिए निरंतर प्रयास करती रहती हैं । देश- प्रदेश की विभिन्न संस्थाओं में हमेशा तत्पर रहती हैं ।

प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति असीम लगाव

बचपन बस्तर में गुजरा था इसलिए उन्हें प्रकृति से गहरा लगाव है, वहा के घने जंगलों तथा पशु-पक्षियों से प्रेम था । " बचपन में उन्हें सेर करने का अवसर अधिक नहीं मिला था लेकिन प्राकृतिक सौन्दर्य पर वह मंत्र मुग्ध थी । जंगल, पहाड़ी, इलाका, पर्वत, नदी और समुद्र आदि उनके लिए रोचक थे । एक बार उन्हें मसूरी जाने का अवसर मिला था । सामने हिमालय पर्वत को देखकर वह बेतहाशा चौंक गई, लगा जैसे वही विस्फोट हो गया है । पहली बार किसी पहाड़ को देख रही थी, और वह भी हिमालय पर्वत को ? जिसके बारे में कितना सुना-पढ़ा था ।"[23] लेखिका ने भूगोल की किताब पढ़कर पूरे संसार को देखा समझा । उन्होंने मन ही मन ठान लिया था कि - " सब देखना है, बड़ी होकर सारी दुनिया देखने जाऊँगी इसलिए गाईड फिल्म भी पसंद आयी थी, पर देवानंद जैसा कोई गाईड मिला ही नहीं, जो समझता- बताता और अपनी बेमिसाल आदतों से प्रभावित करता था ।"[24] पौधे लगाना उनकी देख रेख करना, पक्षी पालना और पैदल चलना आदि में उन्हें अभिरूचि हैं ।

चिड़िया उन्हें बेहद प्रिय हैं शाम को उनके ठहराव में आती हैं वे उन्हें रोज दाने डालती हैं। चिड़ियों के विषय में वे कहती हैं कि - " गौरैया मेरे गुरु हैं, उनसे शक्ति भी मिलती है ।"[25] वे अपने

घर में मछलियों का पालन भी करती हैं। परवेज़ जी को वसंत ऋतु बहुत पसंद है। " वसंत के आते ही जैसे चारों तरफ फिर से रौनक हरियाली दिखने लगती है। चंपा के फूटते फूल और पत्तों की कोमल पीकें। आम के पेड़ पर लहलहातें बौर को देख मन खुशी से झूम उठता है। लौटते पक्षी अपने बसेरे बनाने लगते हैं। कोयल की कुहक और पक्षियों की चहल-पहल के लौटते ही मन को कितना सुकून मिलता है।"[26] प्रकृति के प्रति बेहद लगाव होने के कारण उनकी रचनाओं में प्रकृति की झलक देखने को मिल जाती है, उनकी की ऐसी कोई रचना नहीं,जिसमें प्रकृतिक का जिक्र ना हो।

स्वतुष्टि के लिए लेखन

मेहरुन्निशा परवेज़ जी अपने लेखन के लिए प्रतिबद्ध हैं। जीवन के हर पहलू पर उन्होंने अपनी कलम चलाई हैं। उपन्यास, कहानी, कविता, डायरी, कलम और साक्षात्कार आदि विभिन्न विधाओं पर लेखन किया है। लेखन से उनका अटूट रिश्ता है। जिससे उन्हें दुःख सहने तथा संघर्ष करने की हिम्मत मिलती है। उनका साहित्य के पाठकों के जीवन में परिवर्तन लाने तथा संधर्ष करने के लिए प्रेरित करता है। लेकिन परवेज जी अपने लेखन के बारे में वें खुद कहती हैं - " आत्मसंतुष्टि के लिए। मैंने अँगीठी जलाई थी अपने को ऊर्जा देने के लिए, पर उससे दूसरों को भी उर्जा मिले तो इसमें क्या हर्ज है। बड़े-बड़े आदर्शों की बात तो नहीं सोचती पर जब तक जिंदा हूँ तब तक लिखती रहूँगी।"[27] वह अपने लेखन के प्रति अनुग्रहित हैं।

पिछड़े वर्गो के प्रति संवेदना

मेहरुन्निशा परवेज़ प्रताड़ित तथा पीड़ा ग्रस्त नारी, आर्थिक दरिद्रता में जीवन निर्वाह करता निम्नवर्ग तथा आदिवासियों सभी कमजोर लोगों के लिए संवेदना रखती है। " पद, नाम, दौलत तथा ताकत से ताल्लुक रखनेवाली मेहरुन्निशा जी ने समाज के सबसे ज्यादा पिछड़े कहे

जानेवाले आदिवासी समाज को अपनी रचनाओं का केंद्र बिंदु बनाया।"[28] उनके दुखों, तकलीफों तथा नारी जीवन का यथार्थ चित्रण उनके साहित्य में देखने को मिलता है।

कर्म के प्रति दृढ़ विश्वास

मेहरुन्निशा परवेज़ जी कर्म के प्रति अटूट निष्ठा, विश्वास रखतीं हैं। लेखन, समाजसेवी और संपादन आदि विभिन्न क्षेत्रों में अपने आप को मसरूफ़ रखतीं हैं। अपने बारे में बताते हुए कहतीं हैं कि - " मेरी शुरू से ही कई काम करने की आदत रही है। मैं समाज सेविका भी रही हूँ। और भी कई संस्थाओं में महत्वपूर्ण पदों पर रहकर काम किया है। मुझे लगता है आदमी कई क्षेत्रों में एक साथ काम कर सकता हैं।"[29] लेखिका ने समाज के कमजोर, असहाय लोगों की समस्याओं को तथा पिछडी जाती की लड़कियों की वेश्यावृत्ति पर अंकुश लगाने के लिए अनेंको प्रयत्न किए। लाचार लोगों की दशा को अपने कथा साहित्य का बिषय बनाया, और उनके हालातों पर सरकार का ध्यान केंद्रित करने की अटूट कोशिश भी करती रहीं हैं।

युवा साहित्यकारों को मार्गदर्शन

मेहरून्निसा परवेज़ जी युवा साहित्यकारों को वास्तविक मार्गदर्शन कर उन्हें लगन, मेहनत तथा धीरज से लेखन करने की राय देती हैं। ईमानदारी तथा नियंत्रण के बिना उन्नति प्राप्त नहीं होती इसलिए वह युवा पीढ़ी को सलाह देती हैं कि किसी चीज में उतावलापन ना दिखाए, क्योंकि अच्छा साहित लिखने के लिए बहुत धैर्य नियंत्रण और मेहनत की आवश्यकता होती है। लेखिका अच्छे साहित्य का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहन देती हैं " लेखकों को यह सोचना चाहिए कि वह किसके लिए लिखें और कैसा लिखें, क्योंकि अच्छा साहित्य ढूँढ-ढूँढ कर पढ़ा जाता हैं। अच्छी चीज हमेशा जीवित रहती हैं।"[30] साहित्यकार के लिए कटिबद्धता तथा मुस्तैदी को महत्वपूर्ण मानती हैं "बंधेगा नहीं तो वह अपना धर्म कैसे निभाएगा ? गठबंधन जरूरी है।"[31]

नारी सम्मान की हिमायती

मेहरून्निसा परवेज़ जी नारी सम्मान तथा उनके अधिकारों की हिमायती हैं उनके कथा साहित्य में नारी अपने अधिकारों ,अत्याचारों की लड़ाई-लड़ने मैं सक्षम तथा संघर्षशील दिखाई देती हैं। नारी के दु:ख, तकलीफ,वेदना, शोषण और छटपटाहट को अपने साहित्य में भावुकता से प्रस्तुत किया है । नारी के वैवाहिक संबंधों तथा विवाहेतर संबंधों को एक अलग परिपेक्ष्य से दिखाया है। जिससे पाठकों को उनके नारी पात्रों के प्रति हमदर्दी हो। नारी जीवन की विडंबनाओं को उन्होंने बहुत ही गहराई से प्रस्तुत किया है। नारी मन की उचित-अनुचित इच्छाओं को बड़ी सूक्ष्मता एवं स्वच्छन्दता से चित्रित किया है। रूढ़िवादी, परंपराओं,मान्यताओं और कुप्रथाओं को तोड़कर नैतिक मूल्यों तथा नए मापदंडों को सफलता से स्थापित करने का प्रयास किया है । मेहरुन्निशा परवेज़ जी का मानना है कि हर नारी को स्वतंत्र तथा आत्मनिर्भर होना बेहद जरूरी है। एक नारी ही परिवार को अच्छे से चला सकती है । नारी दयनीय परिस्थिति उनके दु:ख, प्रताड़ना,एवं शोषण के प्रति विद्रोह की भावना उनके कथा साहित्य में सत्यतापूर्वक परिलक्षित होती हैं।

कृतित्व

लेखिका ने अपने अनुभवों को आपने साहित्य में रुपांतरित किया है। उनके साहित्य में समाहित पात्र एवम कथानक भोगे हुए जीवन के संघर्षों को व्यक्त करते हैं। डॉ.नीहार गीते उनके साहित्य के विषय में कहती हैं " मेहरून्निसा जी का लेखन जीवन की समग्रता को प्रस्तुत करता है। सामाजिक व्यवस्था के अभिशाप के बीच उनके पास अपनी मुक्ति का रास्ता ढूँढ़ते हैं । मेहरुन्निशा जी सामाजिक व परंपरागत रूढ़ियों से टकराती नहीं अपितु नयी रहा ढूँढ़ लेती हैं। मेहरुन्निशा जी के पास व्यापक अनुभव है, उसे उन्होंने रचना का आधार बनाया।"[32] मेहरुन्निशा ने अपने साहित्य में इस तरह के पात्रों का सामवेश किया है जिसे पढ़कर लगता है जैसे ये उनके आस-पास देखी हुई घटना है। पात्रों ने आपनी भूमिका को इस प्रकार निभाया है जैसे पात्र न होके

असली जीवन जी रहें हो। अपने पात्रों के चयन के विषय में वे खुद कहती हैं - "मुझे अपनी कहानियों और उपन्यास के कथानक के लिए कभी भटकना नहीं पड़ा। जीवन की इस लंबी यात्रा में जाने कितने चेहरे मिलते हैं जो याद रह जाते हैं और याद रखना बहुत मुश्किल, तकलीफ देह होता है न! और सच मानिए जो चेहरे, घटनाएँ मुझे हमेशा सताते हैं, अकेले में कचोटते हैं, दु:ख देते हैं, वही चेहरे, वही घटनाएँ लिखने के बाद फिर दोबारा मेरे सामने नहीं आये, जैसे दोबारा जी कर वह मुक्ति पा गए हों।"[33] इसकी स्पष्ट छबी हम उनके साहित्य में देख सकते हैं। लेखिका ने अपने साहित्य की शुरुआत बहुत कम उम्र में शुरू कर दिया था। उन्होंने बस्तर के आदिवासियों के दु:ख-दर्द ,मुस्लिम परिवारों की समस्याएँ, शोषित प्रताड़ित नारी की दुर्दशा, आर्थिक विपन्नता, सामाजिक समस्याएँ, दांपत्य जीवन की समस्याएँ,मध्यवर्गीय एवं निम्नवर्गीय नारी की समस्या आदि को अपने कथा साहित्य का विषय बनाया है।

मेहरुन्निशा परवेज़ का उपन्यास साहित्य

उपन्यास मध्यवर्ग का महाकाव्य कहा जाता हैं। उपन्यास केवल जीवन को देखने की दृस्टि नहीं देता, बल्कि उसे बदलने की प्रेरणा भी देता है। मेहरुन्निशा परवेज़ के उपन्यासों की चर्चा करते हुए तसनीम पटेल लिखती हैं कि "मेहरुन्निसा परवेज़ ने हिंदी उपन्यास को एक नयी दिशा, एक नयी औपन्यासिक दृष्टि, नया कथ्य और मुहावरा दिया है। उन्होंने उपन्यास में स्त्री को केंद्रिय सरोकार का विषय बनाया। स्त्री को उसकी सामान्यता के रूप में नहीं, बल्कि विशिष्टता के तौर पर ग्रहण किया। उन्होंने उपन्यास की वस्तु और शिल्प को नई भूमि पर खड़ा करने का प्रयत्न किया है। वैयक्तिक तथ्यो के मनोवैज्ञानिक उद्घाटन और विश्लेषण की क्षमता और योग्यता पैदा की है और उसे कथात्मक दर्रों और रूढ़ियों से मुक्ति दिलाई है।"[34] सामाजिक रूढ़ियों , धर्मिक ब्रह्माडंबरों पर करारा प्रहार किया है। दाम्पत्य जीवन तथा परिवार की स्थितियों को बडे सुंदर ढ़ंग से प्रस्तुत किया है । अपने जीवन के तजुर्बों ने उनके उपन्यास को जीवंत बनाया है, और

सामाजिक उत्थान की अभिव्यक्ति प्रदान की है। अभी तक उनके छह उपन्यास उपलब्ध हैं। जिसकी हम विस्तार से चर्चा करेंगे।

आँखों की दहलीज (सन् 1992)

यह मेहरून्निसा परवेज़ का प्रथम उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखिका ने मर्यादा के चूक जाने या लांघ जाने के दुष्परिणामों को चित्रित किया है। इस उपन्यास की नायिका तालियां सिद्दीकी साहब की एकलौती बेटी है। सिद्दीकी साहब अरसे तक गवर्नमेंट सर्विस में रहे डिप्टी कलेक्टर की पोस्ट पर रिटायर्ड हुए, बुंदेलखंड पसंद आया तो यही बंगला बनवा लिया। सिद्दीकी साहब खुले विचारों के व्यक्ति हैं वह धार्मिक आडंबरों, ढकोसलों को नहीं मानते इसी स्वभाव के कारण वह तालिया को भी पूर्ण आजादी देते हैं, किन्तु पत्नी उससे विपरीत और पुराने ख्यालों की है। दोनों के विचार अलग होने से उनके बीच हमेशा अनबन होती रहती है, तालिया अपने अम्मी-अब्बा के झगड़ों से तंग आकर शमीम से शादी कर लेती है।

इस उपन्यास का आरंभ तालिया के अस्पताल से घर वापिस से होता है। तालिया के घर के चारों तरफ खामोशी ही खामोशी छा जाती है । तभी तालिया शमीम से कहती है - "अफसोस है मि.शमीम, आपको बच्चे का सुख नहीं मिल सकता उम्मीद मेरे ख्याल से बेकार है।"[35] जब से तालिया को अपने संतान हीनता वाली बात का पता चलता है, तब से "जैसे हांड मास की अब एक ऐसी मशीन है, जो इंसान की तरह खाती पीती और सोती है।"[36] परंतु पहले की तरह अब उसके मुख पर कोई रौनक दिखाई नहीं देती, कितनी भी कोशिश कर लो उसपर किसी भी बात का प्रभाव नहीं पड़ता। शमीम,तालिया का दु:ख देखकर उसे कुछ दिनों के लिए उसके मायके छोड़ आता है। तालिया अपने पिता के घर में खुश रहने की कोशिश करती है। परंतु जब भी उसे अपने माँ ना बन पाने वाली बात का ख्याल आता है वह फिर दु:खी हो जाती है। सिद्दीकी साहब के यहां ही तालिया की मुलाकात जावेद से होती है। अम्मी, जमीला, और तालिया, जावेद के साथ गंगुऊ गाँव घूमने जाते हैं। इसी दरमियान तालियां और जावेद एक दूसरे के बेहद करीब आ जाते

हैं। उनको मिलाने का अथक प्रयास तालिया की अम्मी ने किया था। उन्हें लगता है, तालिया को उसके कारण माँ बनने का सौभाग्य प्राप्त हो जाएगा। लेकिन कमी तो तालिया में है। यह बात आलिया की अम्मी नहीं जानती। तालिया, जमीला के सामने अपने गुनाहों पर विलाप करती है रो,रो कर बुरा हाल कर लेती है। तभी जमीला कहती है "तालिया,जिंदगी बहुत मुश्किल है जाने कितने रोल यहाँ अदा करने पड़ते है। मोहब्बत करना जुल्म नहीं बेकार अपने को गुनाहगार मत समझो।"[37]

तालिया को एक अच्छी सहेली मिलती है डॉक्टर शशी जिसके साथ रहना बात करना उसे काफी अच्छा लगता है। यहाँ अचानक जमीला पर अपने साथ भाई बहनों की जिम्मेदारी आ जाती है। घर की परेशानी देख वह नौकरी कर लेती है। जमीला, जमशेद से प्रेम करती है किंतु शादी होना असंभव है, क्योंकि जमशेद की माँ नोकरी पेशा लड़की से अपने बेटे की शादी होने नही देगी। तालिया और जमीला दोनों शशी से मिलने उसके घर जाती है वहां डॉक्टर शशी भी अपने अधूरे प्रेम को लेकर भाग्य को कोसती है। " शशी हमारा समाज ही ऐसा है। हमसे अधिक स्वतंत्रता तो जंगल में रहने वाले आदिवासियों को है।"[38] शशी तालिया से कहती है शादी शुदा होते हुए जावेद से संबंध रखना बेवकूफी है। "हाँ तालिया, एक औरत होकर दूसरी औरत पर जुल्म करना क्या अच्छा है ! हो सकता है उसके बच्चे भी हो । बच्चों से उसका बाप छीनना कहाँ की अक्लमंदी है।"[39] एक दिन जावेद की पत्नी के हाथ तालियां का प्रेम पत्र लग जाता है। वह पूरे घर में हंगामा खड़ा कर देती है। अब जावेद भी तालिया से मिलना बंद कर देता है। यहां तालियां भी बेचैन रहने लगती हैं, और अपनी मम्मी को गुस्सा दिखाती है। "आपकी मर्जी से यह सब हुआ, आप माँ नहीं जल्लाद हैं।"[40] तालिया का दु:ख अम्मी से देखा नहीं जाता और वह जावेद से मिलने चली जाती है। तभी जावेद कहता है "वह सब भूल थी तालिया बहुत खूबसूरत है,बहुत मासूम है, पर हमारा मुकद्दर खूबसूरत नहीं है। हम बहुत देर से मिले और उसका अंजाम भी पा गए। सब भूल जाइए। अब हमें अपने-अपने रास्ते चलना चाहिए मुड़कर देखने में बर्बादी

है ।"[41] अतः तालिया अपने पति शमीम के पास वापस आ जाती है, परंतु उसका अपराध बोध उसे जीने नहीं देता क्योंकि शमीम कभी उसे संदेह की नजर से नहीं देखता उसे बेतहाशा प्रेम करता है । इसी कारण तालिया उदास रहने लगती है, और बढ़ते हुए मानसिक तनाव के कारण वह खिड़की से कूदकर आत्महत्या की कोशिश करती है । लेकिन वह बच जाती है। मुकदमा चलता है, जज उसे आगाह करके छोड़ देते हैं परंतु शमीम को सुखी ही देखना चाहती है । तालिया को लगता है शमीम का सुख संतान में निहीत है । इसलिए वह जमीला से कहती है । तुम मेरी गृहस्ती संभाल लो "नहीं जमीला, हम उसे धोखे से काबू में ला सकती हैं किसी रात मेरी जगह तू उसके कमरे में जाएगी और तालिया का रोल पूरा करेगी । कुछ दिनों बाद हम उस पर यह राज खोल देंगे बाद में उसे तुझसे निकाह पढ़ना ही पड़ेगा ।"[42] अत: तालिया अपना सब कुछ त्यागकर रात के अंधेरे में कहीं चली जाती है ।

इस उपन्यास के बारे में डॉ.जाहिदा तथा डॉ.जोहरा लिखती हैं कि - "इसमें लेखिका ने तालियां के जीवन के प्रति उदासीनता, ऊब, तड़प, मानसिक पीड़ा, आत्मग्लानि और मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है।"[43] डॉ. मिनी सामुआल का मानना है कि - "आँखों की दहलीज उपन्यास प्रेम, कर्तव्य और बलिदान के त्रिकोणात्मक संघर्ष की कथा है । लेखिका ने इस बात पर विशेष जोर दिया है कि नारी जीवन की सार्थकता मातृत्व में है इसमें लेखिका ने नारी जीवन के अधूरेपर, उनकी अंतद्वद्व,निराशा और छटपटाहट को सच्चाई के साथ चित्रित किया है । धार्मिक, रूढ़ियों और अंधविश्वासों पर करारी चोट करते हुए धर्म व्यवहारिक रूप की स्थापना की है ।"[44] इस उपन्यास पर समीक्षा करते हुए डॉ. घनश्याम लिखते हैं कि - "मेहरून्निसा परवेज़ ने इस उपन्यास में नारी मन की एक ऐसी समस्या को लिया है जो शाश्वत है । सभ्यता के आधुनिक विकास में भी नारी वह चिरंतर संतति प्रेम इस कथा का केंद्र है । लेखिका ने स्त्री और माँ, नारी के दोनों स्वरूपों में माँ को अधिक महत्व दिया है । तालिया की मां द्वापर युग की वह सत्यवती है जो अपने बेटों की बहुओं द्वारा अपनी वंश परम्परा चलाने के लिए महर्षि व्यास से प्रार्थना करती है ।

अंतर केवल इतना है कि सत्यवती को सफलता और सम्मान प्राप्त होता है, लेकिन तालिया की मां को असफलता बेटी का क्रोध और समाज के व्यंग बाणों का शिकार होना पड़ता है।"[45]

उसका घर (सन् 1972)

"उसका घर मेहरुन्निसा परवेज़ का दूसरा उपन्यास है जो वर्तमान की खोखली पारिवारिक व्यवस्था तथा भ्रष्ट समाज से जुड़ी एक सुखद सच्चाई है, इसकी नायिका अपनी संघर्षशील जिंदगी लहूलुहान करती हुई उचित रास्ते की तलाश में है। लेखिका नायिका की अनुभूति का साक्षात्कार अपने पाठकों से करवाना चाहती हैं।"[46] यह उपन्यास ईसाई परिवार के परिवेश को लेकर लिखा गया है। इस उपन्यास के केंद्रीय पात्र ऐलमा, रेशमा और आन्टी है "मेहरून्निसा इस उपन्यास की समस्याओं को बौद्धिक धरातल पर लाकर इसे हल्के से समकालीन से जोड़ती हैं। इसमें सीधे तलाक की समस्या नहीं तलाक के बाद की समस्या खड़ी होती है। यह नारी व्यथा के अनुभवों की कहानी है।"[47] इस उपन्यास की सुरुआत ऐलमा के तलाक की चर्चा से शुरू होती है शादी के पश्चात जब पति को पता चलता है कि ऐलमा को दमे की बीमारी है, तो वह इलमा को तलाक देना चाहता है। तलाक के विषय में रेशमा, ऐलमा का विचार जानना चाहती है, किंतु ऐलमा कहती है- "सोचना क्या है, रेशमा यह तो दिल के संबंध होते हैं। पत्नी को भीख में मांगा हुआ अधिकार कभी सुखी नहीं करता।जब उसके मन से उतर गई तो जबरदस्ती करके अधिकार या सम्मान पाया तो जाएगा नहीं।"[48] एलमा बिना किसी प्रतिकार के अपने पति को तलाक दे देती है। तलाक के पश्चात ऐलमा एक स्कूल में पढ़ाते हुए वह अर्थ लोलुप स्वार्थी क्रोधी भाई के साथ उसके घर में रहती है। उसकी कट्टर क्रिश्चियन धर्म का पालन करने वाली आंटी भी वही रहती हैं, साथ ही उसकी बेटी रेशमा जो बिन ब्याही माँ है। देव से प्रेम करती है। लिंविंग रिलेशनशिप में रहती है, और सह सम्मान के साथ वह देव को घर लाना चाहती हैं। किंतु आन्टी रेशमा की शादी क्रिश्चियन लड़के से करवाना चाहती हैं। रेशमा के पिता हिंदू थे, इसलिए रेशमा

भी अपने आप को हिंदू मानती हैं। आन्टी द्वारा प्रताड़ित किए जाने के बाद भी वह अपना फैसला नहीं बदलती। अतः मां बेटी का झगड़ा निरंतर चलता रहता है लेकिन झुकता कोई नहीं।

ऐलमा के भैया धन की लालच में अपनी ही बहन की इज्जत अपने ऑफिस के बॉस आहूजा से बार-बार लुटवाते हैं, जिसके बदले में भैया का अपना बैंक बैलेंस बढ़ता जाता है। अंतर्मुखी ऐलमा आपने भैया के अत्याचारों को मूक बधिर होकर सहती है। किंतु ऐलमा की सहेली सोफिया जो पुरुषों से घृणा करती है। लंगड़े पति के साथ मिलकर एक छोटी सी बेकरी चलाती है। वह ऐलमा के दुःखों को देखकर कहती है यहाँ से कहीं दूर चली जाओ परंतु ऐलमा कहती है - "सोफिया इतनी लंबी जिंदगी घर वालों का कर्ज पाटते-पाटते बीत गई इस घर में जन्म लेने का कर्ज मुझे देना पड़ा है। घर का वातावरण मुझे जीने नहीं देता और बाहर का सहने नहीं देता।"[49] आखिरकार आन्टी से ऐलमा का कष्ट देखा नहीं जाता और भैया पर उन्का गुस्सा फूटपड़ता है; "हां,अब तो कहोगे ही। पर मुझ जैसी औरत तो होगी, तुम जैसा भाई नहीं होगा जो अपनी बहन का सौदा करता हो। तुमने ऐनी को इसलिए तलाक दिलाया था ताकि उसकी सुंदरता का सौदा तुम अपने ऑफिसरो से करो।"[50] अब आंटी, रेशमा भी घर में घुट-घुट कर रहती है। भैया के बदलते तेवर से दु:खी होकर आंटी की एक दिन मृत्यु हो जाती है। मृत्यु के पश्चात ऐलमा विधिवत रेशमा की शादी करवा देती है, और अपने लिए नई दुनिया की तलाश में मद्रास चली जाती है।

इस प्रकार ऐलम अपने पर होतेअत्याचार, शोषण को बिना किसी प्रतिरोध के स्वीकार कर सहती है। उसके विपरीत रेशमा प्रगतिशील, तटस्थ प्रवृत्ति की है। जो अपने पर किसी की जोर जबरदस्ती कभी नहीं सहती। उसे जो चाहिए उसे हासिल करने के लिए सार्थक प्रयत्न करती है। डॉ. रामदरस मिश्र ने इस उपन्यास के संबंध में लिखा है कि "यह उपन्यास ना तो नारी की यातना को बहुत गहराई से उभरकर हमें उद्विग्न कर पाता है और ना बौद्धिक धरातल पर कोई समकालीन गहरा प्रश्न ही उभरता है कारण यह है कि उपन्यास के केंद्र में स्थिर ऐलमा बहुत ही

सीधी समर्पणमयी और गहरे व्यक्तित्व की नारी है वह सब कुछ चुपचाप सह लेती है। इसलिए उसके भीतर प्रश्न में से प्रश्न, यातना से या चोट में से विद्रोह फूटता ही नहीं। वह चुपचाप तलाक सह लेती है। चुपचाप आहुजा की अंकशायिनी बनना स्वीकार कर लेती है और पाठक को लगता है कि ऐसे पात्रों की नियति यही हो सकती है।"[51]

इसके अतिरिक्त उपन्यास में लेखिका ने खोखली परिवारिक व्यवस्था तथा परित्याज्ञ नारी की दशा, नारी-पुरुष के अनैतिक संबंध, अर्थाभाव, भ्रष्ट समाज की एक दु:खद सच्चाई तथा धर्म की अनिवार्यता आदि पर प्रकाश डाला है।

कोरजा (सन् 2000 **)**

कोरजा मेहरुन्निशा परवेज़ जी का प्रसिद्ध उपन्यास है। यह उपन्यास पूर्वदीप्ति शैली में लिखा गया है। 'कोरजा' शब्द अर्थात " खेतों से धान की फसल काट ली गई थी और अब छोटे-छोटे बच्चे हाथों में ठोकने लिए खाली खेतों में धान की गिरी हुई बालें ढूँढ़ रहे थे। बस्तर में इस क्रिया को 'कोरजा' कहते हैं, हल्बी भाषा में।"[52] इस उपन्यास में शोषित लाचार लोगों का चित्रण किया गया है साथ ही लेखिका ने यह प्रस्तुत किया है कि गरीब बेसहारा स्त्रियों को किस प्रकार शोषण का शिकार बनना पड़ता है। हालात और परिस्थितियाँ इन्हें अपने अनुसार नचातें हैं।

इस उपन्यास की शुरुआत नायिका नसीमा के रब्बो आपा के घर आने से होती है। उनकी बेटी की शादी में सालों बाद वह रब्बो आपा को अपने सामने देखकर उसे अपने पुराने दिन याद आ जाते हैं। शादी में रफीक रफीक मुन्नू भी आते हैं, सब बड़े हो गए हैं, और कमाने भी लगे हैं। रफीक जगदलपुर में बहुत बड़ी दर्जी की दुकान चलाता है। नानी की मृत्यु के पश्चात साजो खाला भी टाइफाइड की बीमारी के कारण उनकी मृत्यु हो जाती है। मोना दीदी अपने घर में स्कूल चलाती हैं। एहसान भाई ने शादी कर ली है, और उनके दो बच्चे भी हैं। एक के बाद एक रस्में चलने लगी। बहुत समय बाद जब रस्मो की भीड़-भाड़ खत्म हुई तो रन्नो, नसीमा से कहती है कि

मुझे बाथरूम ले चलो वहां जाकर वह जोर-जोर से उल्टियाँ करने लगती है, नसीमा भौंचक्की सी उसे निहार रही थी। उसे कुछ समझ नही आ रहा था, वह रन्नो को संभाल कर उसे पलंग पर लेटा देती है तभी रब्बो आपा आकर बताती हैं कि "नस्सो इसे दिन चढ़े हैं, दोनों एकदम खुलकर साथ रहते थे। मेरी ही जीद पर यह शादी जल्दी हो रही है, वरना यह दोनों को तो कोई चिंता नहीं थी, क्या जमाना आ गया है !...."[53]

रन्नो के बारे में जानकर नसीमा को नानी के घर सब के साथ बिताये सभी यादें एक के बाद एक ताजा होने लगती हैं। अरमान बी के पति का नाम रहमान खाँ है। पति-पत्नी में हमेशा झगड़े होते रहते थे। रहमान खाँ जितने रहीश थे, उतने ही अय्यास किस्म के व्यक्ति थे। उन्हें अपने बीवी बच्चों से बिल्कुल लगाव नहीं था। दोनों, के दो बेटे और एक बेटी थी जिसका नाम 'फातमा' था। बाद में जाकर बुढ़ापे में अरमान बी ने एक और बेटी को जन्म दिया जिसका नाम 'साजो' था। दोनों बेटों की छोटी उम्र में ही मृत्यु हो गई थीं। रहमान खान ने भी अपने बीवी बच्चों पर कभी ध्यान नहीं दिया उन्हें तो बाहर की औरतें ही अच्छी लगती थीं। कोई समझाता तो कह देते "रहमान खाँ को बाहर की औरत ऐसी लगी थी जैसे किसी को पान के साथ तंबाकू खाने की लत लग जाए। बिना तंबाकू के पान चबाओ तो 'थू...' ऐसा लगता है जैसे घास चबा रहे हैं। वैसे ही घर की औरत में उन्हें घास का-सा मजा आता था और बाहर की औरत में तंम्बाकू का-सा तीखा-चुरपुरा।"[54] माँ-बाप के झगड़े में बच्चे भी उनके प्यार दुलार से वंचित रह जाते हैं। माँ बाप का प्यार क्या होता है वे नही जानते। पति के झगड़े के बाद माँ गुस्से से किसी ना किसी बहाने से बच्चों को पीट लेती, या बाप की जासूसी करने भेज देती। यहाँ अरमान बी और परेशान रहने लगी। क्योंकि बेटी फातमा बड़ी होने लगी थी। अचानक बेटी के प्रति बाप का प्यार देखकर अरमान बी और सचेत हो गयी। वह समझ गयी बेटी के प्रति बाप का प्यार नही बल्कि एक अय्यास आदमी की वहशी आँखों का पानी था, वह फातमा का ब्याह जल्द से जल्द करवा देती हैं। रहमान खाँ के मर्जी के खिलाफ ब्याह होता हैं।

फातमा एक बार जो विदा होकर गयी तो कभी मायके की चौखट नही लांगी। फातमा के पति का नाम करीम मियाँ था। मायके से कभी बुलावा नहीं आया। इसलिए फातमा पति के घर को एकदम संभाल कर रखती है, कही ये आखरी आसरा भी छीन ना जाये। मायके से अवहेलना देखकर पति करीम मियाँ भी फायदा उठा लेते है वह कुछ भी करती तो करीम मियाँ मायके का ताना मार देतें। फातमा और करीम मियाँ के दो बच्चे थे। नसीमा और मुन्नवर जिसे प्यार से सब मुन्ना बुलाते थे। मुन्ना जिसकी छोटी उम्र में बुखार के कारण मृत्यु हो जाती हैं। एक दिन करीम मियाँ कुछ लोगों को घर बुलाते हैं। फातमा से तालाक लेने के लिए, लेकिन तलाक की बात सुन फातमा गुस्सा हो जाती हैं और सब को घर से भगा देती है। सब के जाने के बाद करीम मियाँ फातमा को बहुत मरता है और फातमा को अधमरा छोड़ वह अपना सामान लेकर कही चला जाता है।

यहाँ बेटे के घर छोड़कर जाने के बाद नसीमा की दादी जादा बीमार हो जाती हैं। एक दिन सुबह दादी को सकरात लगी तो अम्मा ने नसीमा से कहां जा अपने अब्बा को बुला ला, जल्दी से दूध रखवाने को बुलाती है वरना जीते जी माँ के दूध का कर्ज नहीं उतरेगा। लेकिन वह नसीमा के बुलाने के बावजूद नहीं आता ऊपर से नसीमा को डांट भी देता है। दादी की मृत्यु के बाद तो जैसे सब बिखर गया। माँ की मृत्यु भी पीलिया से पागल होकर हुई। अब्बा उसे छोड़कर दूसरे शहर चले गए।, नसीमा के पड़ोसी जदूरमियाँ नसीमा को नानी के घर पहुँचा जाते है। नसीमा पहली बार ननिहाल आई थी, उसे देखकर नानी तिलमिला जाती है, नसीमा हूबहू अपनी मां की तरह दिखती है जिसे देखकर नानी को अपनी बेटी याद आ जाती है। नानी के घर में नसीमा के अलावा राबिया, साजो खाला जो नानी की छोटी बेटी है वह अपने तीन बच्चों के साथ यहाँ रहती हैं।

साजो खाला का छोटा बेटा मुन्नू जब पेट में था तभी साजो विधवा हो जाती है। साजो का ब्याह नानी ने बहुत ही धूम-धाम तथा ताम-झाम के साथ किया था। किंतु ब्याह के छः महीने बाद ही साजो मायके वापस आ जाती है कुछ समय बीतने के पश्चात साजो का पति (उस्मान) भी

अपनी सौतेली माँ के अत्याचारों से परेशान होकर वह भी ससुराल में ही आकर रहने लगता है। रहमान खाँ अर्थात नानी के पति, उनकी मृत्यु हो जाती है। तो नानी दामाद को दुकान किराए पर लेकर उसे काम पर लगा देती है। कुछ दिन तो खूब जोश रहा बाद में दुकान घाटे पर चलने लगी। दामाद बाबू बहुत जल्दी दुकान से ऊब गये। अब वह दुकान पर आराम फ़रमाते है कोई सामान लेने आता तो बोलते, यह कोई वक़्त है आने का, उसे डाट कर भगा देते, वह बस्ती गरीब लोगों की थीं। गरीब लोग समय में बध नहीं सकते छोटी-छोटी जरूरतो के लिए दुकान पर भागते हैं। दामाद की काम चोरी के कारण दुकान घाटे पर चलने लगी। नाना के मृत्यु हुई उस समय तक इनके पास खेती, घर, गाय और भैंस सब थे। इतना था कि पूरे परिवार का गुजारा आराम से हो जाता। लेकिन नाना की मृत्यु के पश्चात वह अपनी सास और पत्नी को बेवकूफ़ बनाकर खेत-खलियान सब बिक गये। यहाँ तक की साजो को डाट-फटकार कर उसके गहने गिरवीं रखकर शराब के नशे में रहने लगा, यहां तक कि गंदी औरतों के पास भी जाने लगा। घर भी गिरवी रखना पड़ा। दामाद को पेट में जालंधर हो गया घर में बचा खुचा जो भी था सब दामाद की बीमारी में लग गया, उसके बावजूद उसकी मृत्यु हो जाती है। नानी ने घर जुम्मन खाँ के यहाँ गिरवी रखा था। जुम्मन खाँ नानी और साजोखाला को घर बुलाकर सौदा करता है कि "घर में रहने का किराया नहीं लूँगा अगर रोज रात साजो यहाँ आएगी तब।"[55] नानी , साजो दोनों दोनों भौंचक्की एक दूसरे को निहारने लगी। नानी कहती हैं " एक दिन यह भी होगा, इतने नीचे भी उतरना पड़ेगा, कहाँ सोचा था ? इज्जतदार घर की आबरू बाजारू होकर रह जायेगी यह कभी सपने में भी नहीं सोचा था।"[56] साजो खाला, परिवार और बच्चे बेघर ना हो जाये इसलिये अपने को कुर्बान कर देती है। इस उपन्यास की समीक्षा करते हुए डॉ. शील प्रभा वर्मा लिखती हैं - " कोरजा उपन्यास में मेहरून्निसा परवेज ने साजोखाला के रूप में जिस विधवा नारी का चित्रांकन किया है, वह समाज के बीभत्स सत्य को नग्न रूप में हमारे सामने खड़ा कर देता है। साजो विधवा है, घर की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर है कि परिवार के रहने के लिए घर की समस्या उठ खड़ी होती है।

जुम्मन इस शर्त पर घर खाली नहीं करवाता की साजो रोज रात को उसके घर आएगी। साजो इस शर्त को मान लेती है विधवा नारी का उपयोग कितने गिरे हुए स्तर पर पुरुष कर सकता है साजोखाला इसका प्रमाण प्रस्तुत करती हैं।"[57]

राबिया जिसे प्यार से सब रब्बो बुलाते हैं। साजो खाला की सगी फूफी के लड़के की बेटी है। देखने में बेहद खूबसूरत है पैदा होते ही माँ चलबसी, माँ की मृत्यु के पश्चात पिता ने दूसरी शादी कर ली। रब्बो बचपन में दादी के साथ रहती थी, लेकिन दादी की मृत्यु के बाद वह अपनी सौतेली माँ के साथ रहने लगी। माँ उसपर बहुत जुल्म करती थी। एक दिन सौतेली माँ के दूर के रिश्ते का भाई जमशेद छुट्टियां बिताने उनके घर आता है। वह एक तीर से दो निशाने करने का आदी था। एक दिन जमशेद रब्बो को बहला-फुसलाकर उसका फायदा उठा लेता है। छुट्टियां बिताने के बाद वह वापस चला जाता हैं, और यहां रब्बो गर्भवती हो जाती है। माँ को पता चला तो वह उसे मार-मार कर अधमरा कर देती है। लोग उसे गर्भपात करवाने की सलाह देते हैं लेकिन माँ उसे ऐसा करने से मना करती है वह कहती हैं पाप किया है तो सजा भी भुगते। जब बात जगदलपुर गयी तो उस्मान खालू जाकर उसे नानी के यहां ले आते हैं। नानी खूब मारती-फटकारती, कोशती है, फिर बाद में अपना लेती है। वह सात महीने में एक लड़के को जन्म देती है। जो पैदा होते ही मर जाता है। रब्बो के उस घाव को भरने में कई साल लगे थे। कम्मो नसीमा की पड़ोसन है। कम्मो के दूर के रिश्ते का भाई एहसान रब्बो से प्रेम करता है और रब्बो भी उसे चाहने लगती है।

कम्मो के माता-पिता बचपन में ही चल बसे थे। उसके चाचा चाची ने उसकी देखभाल की थी, उसकी पढ़ाई की जिम्मेदारी उठाई थी, बाद में चाचा की मृत्यु हो गई, तो चाची और कम्मो एक दूसरे का सहारा बन गये थे। कम्मो ने बी.ए करके आगे पढ़ने की इच्छा छोड़ दी और बाद में नौकरी कर लेती है। नानी की पड़ोसन बनने के पहले वह अमित के पड़ोस में रहती थी। वहीं उसकी मुलाकात अमित और उनके परिवार से हुई थी। अमित का परिवार भी वहाँ किराए

पर रहता था। मोना दीदी कम्मो से उम्र में बड़ी थी। मोना दीदी का एक छोटा भाई भी था जिसका नाम दीपू था। वह बचपन से पागल था। पहले इनका परिवार बड़े घर में रहता था जब से मोना के पिता की मृत्यु हुई तो उन्हें घर किराए पर देना पड़ा मोना के ट्यूशन की फीस और घर की किराए से घर का खर्च चलता है। एक दिन दीपू के कमरे की कुंडी लगाना भूल गए तो वह घर से भाग निकला और ट्रक के नीचे आ गया और उसकी मृत्यु हो जाती है।

अब कम्मो अमित के बिखरे हुए जीवन को संवारने लग जाती है। कम्मो के जीवन में पहली बार किसी पुरुष ने दस्तक दी थी। दीपू के मृत्यु के पश्चात वहाँ रहना अच्छा नहीं लगा।वह फिर एक नई जगह किराए की मकान की तलाश करने लगी, अमित ने ही नानी के घर के पास किराए पर मकान दिला दिया तब से वह नानी की पड़ोसन बन गई थी। एक दिन चित्रकूट जाने के लिए कम्मो, नसीमा, रब्बो, मोना दीदी, अमित, अहसान सब एक साथ चित्रकूट जाने की योजना बनाते है। रब्बो, नसीमा नानी से चित्रकूट जाने की इजाजत मांगते हैं ये दोनों नानी से झूट बोलती हैं कि सिर्फ लड़कियां ही जा रही हैं और अमित अहसान के जाने वाली बात छिपा लेती हैं बहुत मिन्नतों के बाद नानी इजाजत दे देती हैं। वहाँ जाकर नसीमा, मोना दीदी से पूछती हैं की आप ने ब्याह क्यों नहीं किया? मोना दीदी बताती है "मैंने भी प्यार किया है नसीमा। मैंने भी शादी ना होते हुए भी शारीरिक सुख को आँख मूँद कर महसूस किया है। पर मेरी बहन, मुझसे इतनी ही गलती हो गई कि मैंने जो माँगा, जो पाया, याने जो सेंका वह पराई आग में। वह पराई आग थी जहाँ मैंने घड़ी भर के लिए हाथ बढ़ाकर सेंक लिए थे।"[58] और आगे बताती है कि जिससे ब्याह होने वाला था उसकी मृत्यु एक एक्सीडेंट में हो गई तब से ब्याह का सुख उसके नसीब में नही है यह मान लिया। अब वह अपने भाई अमित का जीवन सुधारने सवारने के लिए ही जी रही हैं।

यहाँ रब्बो के लिए रिश्ता आता है। रब्बो का एक अधेड़ उम्र के कुरूप, दो बच्चे के बाप से रिश्ता तय होता है। रब्बो के रिश्ते की बात नसीमा, अहसान को बताती है लेकिन अहसान रब्बो के साथ ब्याह के लिए मना कर देता है। वह कहता है अभी उसपर बहुत जिम्मेदारी है अभी

ब्याह नही कर सकता। रब्बो उसके बच्चे की माँ बनने वाली होती है। उसके मना करने के बाद रब्बो अंडे वालीखाला से गर्भपात की दवा लेती है, और गर्भपात हो जाता है। वह अन्तः नानी के पसन्द किये लड़के से ब्याह के लिये तैयार हो जाती हैं। वह नानी पर बोझ नही बनना चाहती थी। इसलिए दो बच्चे के बाप से ब्याह स्वीकार लेती है। नसीमा दूल्हे के चेहरा देखकर काप जाती है - " एकदम काले रंग का, आधी से ज्यादा उम्रवाला बूढ़ा-सा वह दूल्हा था। अल्लाह रे ! कहाँ रब्बो आपा कहाँ यह काला दूल्हा ! "[59] रब्बो नानी के घर से विदा होकर चली जाती है।

अमित, कम्मो को अपने नपुंसक होने की बात बताता हैं, और इसी गम को भुलाने के लिए वह शराब पीता है। अमित की सच्चाई जानने के बाद कम्मो उससे दूरी बना लेती है। इसी गम में अमित शराब के नशे में अपने को पूरी तरह डुबो देता है। इसी कारण उसके दोनों फेफडे खराब हो जाते हैं। डॉक्टर ने बताया कि अब वह बच नहीं सकता। एक दिन उसकी मृत्यु खबर आती है। अमित की मृत्यु के बाद कम्मो भी उसके दुःख में आत्महत्या कर लेती है।

अब यहाँ नसीमा अकेले रह जाती है, और सोचती हैं - " वह उसी खाट पर लेट कर ढेर सारे विचारों में खो गई। रब्बो आपा, कम्मो और मोना दीदी-तीन विचित्र कैरेक्टरों को उसने पास से देखा-परखा था। एक ने गरीबी की आग में अपने को झोंक दिया, दूसरी ने प्यार के लिए अपने को खत्म कर लिया और तीसरी ने...? तीसरी सारे दुखों का गवाह रही, अपने जीवन की, अपने सुखों की आहुति दे डाली। नसीमा समझ नहीं पा रही थी तीनों में बड़ा कौन है, कौन था ? शायद मोना दीदी। जो सब कुछ देखकर, समझकर और सहकर भी जिंदा है।"[60]

रब्बो के ब्याह के बाद नानी की आर्थिक स्थिति और बिगड़ जाती है। उसका असर घर के बच्चों पर भी पड़ता है। वही नसीमा के अब्बा का खत आता है कि वह उसे लेने आ रहा है। नसीमा को अब्बा के साथ जाने की इच्छा नहीं थी लेकिन नानी के हालात को देखकर वह जाने को राजी हो जाती हैं। जिस दिन वह जाने वाली थी नानी ने ढेर सारे पकवान बनाये थे। साजोखाला बहुत रो रहीं थीं, किन्तु नानी के आँखों से एक आंसू तक नहीं टपकते। नानी ने अपने

जीवन में इतने दुःख, तकलीफे झेली है कि अब वह पत्थर बन गई है । रिश्का आता है और नसीमा रोते हुए रिश्के में बैठ जाती है । उसका कलेजा मुँह को आ जाता हैं उसके पास कोई नही था ना रब्बो आपा, ना कम्मो, ना मोना दीदी जो उसे फिर मिलने आने का वादा करती। रिश्का आगे चलने लगता है सब जा चुके थे सिर्फ नानी खंडहर हुए घर के सामने खड़े होकर उसे जाते एकटक निहार रही थी । उसे अचानक नानी की कहि बात याद आ जाती हैं - "मौत... मेरी, दूसरों को आ रही है ।" "मेरी मौत मेरा दरवाजा भटक गई है । कहते हैं जो कब्रिस्तान का रखवाला होता है उसे सबसे देर में मौत ले जाने आती है । मैं भी तो जिंदा कब्रिस्तान की तकियादार हूँ न !"[61] नसीमा पुरानी स्मृतियों में खोई रहती है तभी रब्बो आपा उसका बाह पकड़ कर खिंचती हैं। यही उपन्यास का अंत होता है ।

नसीमा भूले बिसरी यादों को 'कोरजा' के रूप में चुनती है । इस प्रकार कथावस्तु की दृष्टि से इस उपन्यास का शीर्षक 'कोरजा' सार्थक और सफल बन पड़ा है ।

अकेला पलाश (2002)

यह उपन्यास दाम्पत्य जीवन में आये ठंडेपन की समस्या तथा विवाहेतर संबंध की समस्या, उच्च पद पर कार्यरत नारी की समस्या, अंतरजातीय विवाह की समस्या, वैवाहिक जीवन की समस्या, बेरोजगारी की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या आदि सामाजिक समस्याओं और नारीवादी चेतना को इस उपन्यास के अंतर्गत प्रस्तुत गया है । डॉ.शीलप्रभा वर्मा इस उपन्यास की चर्चा करते हुए कहती हैं - "अकेला पलाश उपन्यास बदलते सामाजिक संदर्भों को आत्मसात किए हुए है । कृति नायिका तहमीना के पौरुषहीन पति एवं सुंदर स्वस्थ प्रेमी के त्रिकोण को लेकर लिखी गई है । प्रस्तुत कृति युगानुरूप सामाजिक प्रयत्नों के अनेक प्रसंग एवं तथ्य लिए हुए हैं ।"[62]

सालो बाद तहमीना के पास तुषार का पत्र आता है। जिसे देखकर वह अतीत की यादों में खो जाती है। आज वह प्रभावशाली व्यक्तित्व की महिला है, लेकिन सालो पहले वह कमजोर, लाचार थी।

तहमीना समाज सेविका है और चेयरमैन के पद पर कार्यरत है जो अपने पति और बेटे रिंकू के साथ जगदलपुर में रहती है। दफ्तर की स्थिति बिल्कुल अच्छी नहीं है वहा कार्य करने वाले कर्मचारी नियमित रूप से ऑफिस नहीं आते पुरानी चेयरमैन को एक रबर स्टांप की तरह इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन तहमीना अपना पूरा काम इमानदारी, सतर्कता पूर्वक करती है। वह अपने औधे और दायित्वों को भली-भाँति समझती है और उसका निर्वाहन भी बखूबी करती है। किंतु अपने ऑफिस की जिम्मेदारियों को निभाने में उसके निजी जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उसे अपने बाहरी जीवन और निजी जीवन के कर्तव्यों को निभाने में अपने पति का सहयोग नहीं मिलता। जमशेद सिर्फ नाम का पति था। वह अपने पति से कहती हैं " देखो, तुम मेरे शरीर के साथ जो खिलवाड़ करते हो, मेरे शरीर की इच्छाओं को जगा देते हो और उन इच्छाओं की माँग को तुम पूरा नहीं कर सकते, तब तुम मेरे पास आते क्यों हो ?"[63] इसलिए दोनों में हमेशा छोटी-छोटी बात को लेकर झगड़े होते रहते हैं। जैसेकि "क्या सब्जी बनाऊँ ?" तहमीना ने उनसे पूछा।" तुम रोज पूछ-पूछकर बोर करती हो। बढ़िया-सी कोई चीज बनालो।"...." फिर बनाने के बाद नाक-भौं मत सिकोड़ना, खाने में सबसे ज्यादा रुचि तो आपको ही है", तहमीना ने खीजे हुए शब्दों में कहा, नौकरानी चली गयी है, सब्जी के नाम पर केवल आलू और बैंगन है।"[64] इसी तरह एक दूसरे से लड़ते हुए दोनों का जीवन आगे बढ़ता है।

तहमीना जब कभी अकेले शांत होकर बैठा करती थी तो वह कितने-कितने घंटो विचारों में गुजारा दिया करती थीं। एक दिन अचानक बहुत दिनों के पश्चात उसे अपना बचपन याद आ गया जिसे सोचकर आज भी उसका दिल दहल जाता है। उस समय उसकी आयु पंद्रह वर्ष की रही होगी, एक नाजुक फूल की भांति कोमल शरीर था जिसका गठन भी पूर्ण रूप से विकसित

नहीं हो पाया था वह सोचती है उसका जीवन भी कितना रहस्य पूर्ण है जो वह सारे रहस्य को अपने में समेटे हुए हैं और एक दिन वह सभी रहस्यों को अपने साथ ही दफन कर देगी। तहमीना बचपन से ही अपने माता-पिता के झगड़ों को देखती आई है। वह माँ जिसने कभी भी अपने जीवन में सुख नहीं देखा, हमेशा ही लाचार रही, कभी बेटी के रूप में, कभी पत्नी के रूप में, पति का सारा समय अय्याशी में जाता था जिसका कभी घर में पैर नहीं टिकता था। बाहर की औरतों पर पैसा लुटाया करते थे। घर पर बीवी बच्चे भूखे मरे उन्हें उससे कोई मतलब नहीं था उन्हें तो यह भी पता नही था उनका कौन सा बच्चा किस कक्षा में पढ़ता है जब माँ से झगड़ा होता तो पत्नी, बच्चों को घर से निकाल देते थे और वह भी लाचार कुछ दिन अपने रिश्तेदारों के यहां बिता कर घर वापस आ जाते। माँ ने अपनी हिफाज़त के लिए अपनी बेटी की शादी अपने पति के दोस्त के साथ करने की सोचती है। जिसने अभी यौवन के द्वार पर पैर ही रखा था उसे इतनी कम उम्र में जोबन की किताब का पहला अध्याय पढ़ लिया था। उसे वह आज भी एक रहस्यमयी बात ही लगती है। जो व्यक्ति उसके पिता के उम्र का था और उसे बिल्कुल पसंद नही था उस व्यक्ति ने, उसके घर में, उसकी अपनी माँ के सामने उसकी इज्जत लूट ली। उसे, उसी दिन एहसास होता है औरत की इज्जत क्या होती है - "औरत अपनी इज्जत को बचाने के लिए या तो जान दे देती है, या फिर उसी व्यक्ति से शादी कर लेती है।"[65] तहमीना के अपने सपने हवा हो गये थे जो हकीकत से कोशों दूर थी "कम उम्र की तहमीना, जिसका शरीर भी अभी पर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाया था, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह खेत में नन्हे-नन्हे पौधे बढ़ते हैं, लालायित रहते हैं पानी के लिए, उचित हवा के लिए, उचित खाद के लिए, पर अचानक बाढ़ का पानी आता है, आँधी से भरे झोंके के आते हैं और एकाएक उन पौधों का जीवन नष्ट हो जाता है""। बस वही हाल तहमीना का था।"[66] माँ ने अपनी सुरक्षा के लिए तहमीना का बलिदान दिया था, जिससे पिता को अहसास दिला सके कि अब वह एक बेटी के पिता होने के साथ एक ससुर भी है। अब उनके

करतूतों का असर बेटी पर भी होगा। तहमीना सब कुछ अपनी नियति मानकर आगे बढ़ जाती है और अपनी माँ को क्षमा कर देती है।

नाहिद बाजी जो तहमीना की दूर की रिश्ते की बहन है जो कुछ दिनों के लिए उसके पास रहने आती हैं। वह डॉक्टर हैं। उम्र में तहमीना से बडी है। घर की जिम्मेदारियों के कारण कुँवारी है। अब्बा जो क्लास वन के ऑफिस रह चुके हैं आज मामूली से कपड़े-चप्पल पहनते हैं। भाई की अच्छी नौकरी है पर उनके अपने खर्चे ही पूरे नहीं होते तो अब्बा को क्या देते। और अब्बा को किसी के सामने हाथ फैलाना पसंद नहीं। अब्बा की पेंशन और मेरी तनखा से घर का गुजारा होता है । अस्पताल से क्वार्टर मिलने पर वह वहाँ रहने चली जाती है। वहाँ उनकी मुलाकात डॉ. महेश अग्रवाल से होती है जो कॉलेज में उनके विद्यार्थी थे। दोनों की जान पहचान प्यार में बदल जाती है। जब बात तहमीना को पता चलती है तो उसे यकीन ही नही होता कि बाजी किसी से प्यार भी कर सकती है उनके चहरे से बिल्कुल दब्बू किस्म की लगती है। नाहिद बाजी और महेश दोनों अपने घर वालों के विरुद्ध जाकर अंतरजातीय विवाह कर लेते हैं। लेकिन विवाह के बाद महेश की माँ उन्हें बहु वके रूप में स्वीकार नही करती, क्योंकि वह मुस्लिम है और उनका छुआ पानी भी नहीं पीती। एक पढ़ी लिखी स्त्री को नौकरानी की तरह रखा जाता हैं। नाहिद का मायके से रिश्ता टूट चुका ही था यहाँ ससुराल में भी अवहेलना ही मिली।

तहमीना ने महसूस किया कि ऑफिस में विमला का दबदबा है। क्योंकि वह मिनिस्टर की सिफारिश से आई है। उसके लिबास से सन्यासिनी लगती है जो स्वामीजी के साथ रहती है। तहमीना, विमला से पूछती है कि तुम स्वामी जी के पास कैसे पहुँची ? विमला बताती हैं मैं एक संपन्न परिवार से हूँ, मेरे पिता की समाज में इज्जत है। माँ बचपन से ही मुझे बहुत प्यार करती थी मेरे घर छड़ने के बाद से बीमार रहने लगी हैं। धर्म के प्रति मेरा झुकाव अधिक था मौका देखकर मैं घर से भाग निकली और एक आश्रम में जा पहुंची। जहां मुझे जासूसी करने को कहा गया, मैंने मना किया तो " मेरे सारे वस्त्र उतार कर मुझे रस्सियों से बाँध दिया। भूखे-प्यासे मुझे चार दिन रखा

गया और फिर उसी रात दस व्यक्तियों ने मेरे साथ बलात्कार किया। दुख, पीड़ा और शौक से मेरी आत्मा त्राहि-त्राहि करने लगी, पर वहाँ से निकलने का कोई रास्ता नजर नहीं आया।"[67] मौका देख वहाँ से भाग निकली, लेकिन कहाँ जाऊ कुछ समझ नहीं आ रहा था। एक बार सन्यास लेने के बाद परिवार व समाज दुबारा नही अपनाते। इसीलिए दूसरे आश्रम में जा पहुंची किन्तु यहाँ पहले वाले आश्रम से ज्यादा बुरे काम होते थे। मुझे एक शहर से दूसरे शहर पूजा के लिए भेजा जाता था। मैं वहाँ से भी भाग निकली और फिर भटकते-भटकते श्री माँ के आश्रम पहुँची। ये आश्रम और आश्रमों की तरह नही था, लेकिन यहाँ के अनुशासन बहुत कठिन थे। यहाँ सन्यासी बनने के लिए कठिन परीक्षा देनी पड़ती थी। जो मेरे बस में नहीं था इसलिए श्री माँ से इजाजत लेकर स्वामी जी के पास आ पहुँची। स्वामी जी मुझे भटकने नही देखना चाहते इसलिए अपने पैरों पर खड़ा करना चाहते हैं। वह बताती हैं "आपको बताऊँ मैडम, यह आश्रम बकायदा सरकारी दफ्तरों की तरह चलाए जाते हैं। अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सेकेटरी, खजांची सब रहते हैं, जो आश्रम का पूरा हिसाब रखते हैं। मुझे कई आश्रमों समें सेकेटरी बनाने की भी लालच दी गयी, क्योंकि मैं ग्रेजुएट हूँ। बस इन्हीं सब बातों से मुझे बचाये रखने के लिए स्वामीजी ने मुझे नौकरी करने को कहा और खुद मेरे साथ रहने को तैयार हुए।"[68] स्वामीजी उसके साथ रहते हैं और वह स्वामी जी का पूरा खर्च उठती है। तहमीना को समझने में देर नही लगी की " स्वामी जी ने इसे कमाई का आधार बनाया है, इसकी बिगड़ी का उपयोग कर रहे हैं, वरना साधु-संन्यासियों को नौकरी करने की क्या आवश्यकता ? दूसरे आश्रम में इसके शरीर का उपयोग किया गया और यहाँ डिग्री का हो रहा है। मतलब यह कि हर व्यक्ति अपने-अपने ढंग से इसे बहका रहा है।"[69] विमला का जीवन नर्क बन जाता है लेकिन वो अपने छोटे भाई बहनों पर कोई विपत्ति न आये और पिता की पतिष्ठा पर उँगली उठे वह नही चहती इसलिए वो घर वापस नही जाती।

विपुल तहमीना का मुंह बोला भाई हैं। जो होनहार, समझदार युवक है। तहमीना विपुल से बात करना पसंद नहीं है।, उसके बावजूद तहमीना उससे बात करना बंद नहीं करती। विपुल

की आथिर्क स्थिति ठीक नहीं है, इसलिए वह आथिर्क तौर पर बहुत संघर्ष करता है। तहमीना उसे हमेशा कहती हैं एक दिन तुम बहुत बड़े आदमी बनोगे। एक दिन तहमीना, तरु से विपुल को मिलवाती है तरु दो बच्चों की माँ हैं और पति से अलग रहती हैं। अंततः विपुल तरु से शादी कर लेता है और तहमीना को पत्र लिखकर बताता है दीदी आपके सामने आने का सामर्थ नहीं था इसलिए पत्र के माध्यम से बताता हैं तरु से अगर में शादी नही करता तो वह दल-दल में धसती चली जाती। वो दोनों बच्चे मेरे है। देहरादून में एक प्राइवेट फर्म में नोकरी लग गयी है। रहने के लिए बंगाला भी है सारी सुख-सुविधाएँ हैं।

यहाँ तहमीना के जीवन में एक नया मोड़ आता है। ऑफिस में टाइपराइटर चोरी हो जाता है। इसी सिलसिले में तहमीना एस. पी तुषार से मिलने जाती हैं। तुषार, जमशेद और रिंकू से दोस्ती कर लेता है। वह तहमीना से किसी न किसी बहाने मिलने आ जाता हैं। तहमीना जितना तुषार से दूर रहना चाहती है वह उतना ही उसके करीब आने की कोशिश करता है। धीरे -धीरे दोनों का संबंध बहुत आगे बढ़ जाता है। जमशेद ऑफिस के सिलसिले में इंदौर जाता हैं। तहमीना बेटे रिंकू को गार्डन घुमाने लेकर जाती है। वहाँ उसे तुषार मिलता है जो उसे घर छोड़ने के बहाने तहमीना के साथ उसके घर आ जाता है। वह तहमीना के करीब आना चाहता है लेकिन तहमीना उसे समझती हैं "नहीं, नही तुषार, तुम्हारी अपनी सीमा है, उससे आगे मत बढ़ो। तुम भूल रहे हो, मैं किसी की ब्याहता हूँ, किसी के साथ में ईमानदारी से जुड़े रहने की शर्त मेरे साथ बाँध दी गयी है।"[70] लेकिन तुसार उसकी बात नहीं मानता और दोनों शरीरिक रूप से करीब आ जाते है। कुछ दिन तो उसके साथ अच्छे से रहता है। फिर तुषार लोक-लाज, समाज , परिवार का वास्ता देकर तहमीना से दूर हो जाता है। लेकिन तहमीना तुषार के लिए तड़पती है और ऑफिस में काम करने वाली मीनाक्षी से कहती हैं - "यह कैसा दर्द है वह बार-बार अपने को टटोलकर पूछती, उसे शांति क्यों नहीं है ? दिल को किसी पल चैन क्यों नहीं है ? दर्द का फोड़ा हर पल, हर क्षण टीसें देता है,

जिंदगी में क्या मिला ? शायद कुछ नहीं। विरानी ही विरानी है अब तो जिंदगी में"! सब तरफ धूल ही धूल"' धुंधलापन है चारों ओर, हर खुशी पत्ते की तरह उड़ती नजर आती है।"[71]

तहमीना, अपने अकेले पन को स्वीकार के आगे बढ़ जाती है। और पूरी तरह से अपना ध्यान अपने काम में लगाती हैं। वह अपने को पलाश के फूल की भाँति समझती हैं। जो सुन्दर है लेकिन उसे किसी जुड़े में सजाया नही जा सकता, ना ही किसी गुलदस्ते की शोभा बढ़ा सकता है बस वह अपने डाल पर लगता है वहीं से सूखकर गिर जाता है उसका किसी से कोई वास्ता नहीं होता। इस सत्य को वह आज जान पाई थी।

इस उपन्यास में लेखिका ने सामाजिक स्थिति पीतृसत्तात्मक समाज, पुरुष की भोगवादी, पलायनवादी मानसिकता, कामकाजी महिलाओं के जीवन की समस्या तथा अनमेल विवाह की समस्याओं को पाठकों के समक्ष लाने का प्रयत्न किया है। 'अकेला पलाश' कथावस्तु की दृष्टि से सफल उपन्यास हैं।

पासंग (सन् 2004)

'पासंग' उपन्यास के विषय में मेहरुन्निशा परवेज़ जी कहती हैं "बेटी सिमाला को और उसकी नई पीढ़ी को अपना नया उपन्यास पासंग सौंपती हूँ। अपने लक्ष्य को जान लेना मात्र ही सफलता की कुंजी है। जिन्दगी को हमेशा एक मकसद बना कर जीना ही इन्सान को सिकन्दर बनाता है। पासंग, उपन्यास अपनी युवा पीढ़ी को सौंपना चाहती हूँ। औरत की व्यथा, दु:ख, हताशा, तथा उसके संघर्ष को मैंने इस कथा में लिखा है। युवा पीढ़ी को शायद अपने उलझे प्रश्नों के उत्तर इसमें मिल जायेंगे।"[72] इस उपन्यास की नायिका 'रुकैय्या' है, जिसे सब कनी कहते हैं।अन्य पत्रों में दादी, साबरा, कुलसुम, बानोआपा, आदि पात्र निहित है।

रहमत चाचा दादी के दूर के रिश्तेदार थे जो कनी की संपत्ति का देख-रेख करते थे। चाचा के कहने पर ही वह अपनी संपति बेचने को तैयार होती है। चाचा अब बूढ़े हो रहे हैं। संपति की

रखवाली कौन करेगा। वैसे भी लोग हड़पने को तैयार बैठे हैं। उसकी जगह पर अपार्टमेंट बनने वाला है। रहमत चाचा अपनी पोती के ब्याह में कनी को पत्र लिखकर आने का आग्रह करते हैं। ब्याह के साथ संपत्ति की रजिस्ट्री भी हो जायेंगी। रहमान चाचा के बुलाने पर वह अपने आप को रोक नहीं पाती और अपने बेटे को लेकर रायपुर से जगदलपुर आ जाती हैं। कनी, बूढ़े चाचा को दूर से देखकर पहचान लेती है, और अपने बेटे को समझती हैं मिलते ही सलाम करना। रहमान चाचा, कनी से कहते हैं कि बेटा तुम्हें देखने की बहुत इच्छा थीं, इसलिए तुम्हें जोर देकर बुलाया नहीं तो संपत्ति बेचकर रकम मैं भेज सकता था। कनी अपने आँसू रोक नहीं पाती और कहती है इसलिए तो चाचा चली आई मेरे मायके वालों में बस आप ही बचे हो, बाकी सब की तो मृत्यु हो गयी है। चाचा अपने बहु- बेटे, और उनके बच्चों से कनी को मिलातें हैं। बगल के कमरे में हल्दी की रश्म चलती हैं, वहाँ कनी को सभी बड़ी उत्सुकता से देखते हैं। और पूछते हैं तुम वहीं हवेली वाली कनी हो ना। उसकी सुंदरता को देख कर एक लड़की उससे कहती हैं तुम कितनी सुन्दर हो। कनी को देखने मिलने क्या बूढ़े, क्या जवान, बच्चे सब इकठा हो जाते हैं जिसकी सिर्फ चर्चा सुनी थी सब उसे अपनी आँखों से एक बार देख लेना चाहते थे। कनी आई भी तो वर्षो बाद थीं।

कनी बाड़ा-हवेली की एक लौती वारिश है। वह चाचा के साथ अपनी हवेली देखने जाती हैं। उस खँडहर हुई हवेली को देखकर, कोई नहीं कह सकता था कि कभी यहाँ रौनक, खुशियाँ, उत्सव, ठहाके, पायलों की छम-छम, चूड़ियों की खनक गूँजा करती थीं। जहाँ कनी, कुलसुम और बानोंआपा के अपने ठिकानें थे। आज उनकी जगह जँगली कबूतरों ने कब्जा कर लिया था। हवेली पर जाकर कनी अपने बीते दिनों की यादों में खो जाती हैं।

कनी दादी की एकलौती वारिश थी। सिर्फ जायदाद कि ही वारिश नहीं थीं बल्कि उनके दुःख-दर्द, तकलीफे भी उसके हिस्से आये थे। लेखिका ने कनी के कलेजे को फड़फड़ाते कबूतर की उपमा दी है, क्योंकि कनी के जीवन में एक के बाद एक मुसीबत आती रहती हैं। उसके पिता की मृत्यु हो जाती हैं। नाना जी उसकी माँ साबरा का दूसरा ब्याह करवा देते हैं। इसलिए दादी

कनी की माँ से नाराज़ रहती हैं और उसे कनी से भी मिलने नही देती। दादी ने कहाँ है कि उनके जीते जी उसकी माँ घर में कदम नहीं रख सकती। लेकिन उसकी माँ बीच-बीच में गाँव के बुटून पटेल के घर कनी से मिलने आती हैं। कनी दादी से झूठ बोलकर कुलसुम की मदद से अपनी माँ से मिलने जाती हैं। कुलसुम दादी के बहन की नातिन है। कनी सोचती हैं अगर कुलसुम ना हो तो कभी भी अपनी माँ से मिल नहीं पाती " चोरी और वह भी सीनाजोरी करने की उसकी हिम्मत कहाँ? दादी के नाक के नीचे व चोरी कर रही थी और दादी को कानों-कान खबर नहीं थी। दादी को अगर खबर हो गई तो उसकी आँखों से कैसी चिंगारियाँ निकलेगी, जैसे जिंदा ही भून् कर खत्म कर देंगी।"[73] कनी की अम्माँ कोटपाड़ नगर से कनी से मिलने आती हैं। दोनों बुटून पटेल के घर अम्माँ से मिलने जाती हैं। कनी को हमेशा अपनी माँ की याद सताती हैं। कनी अपनी माँ की लाचारी, मजबूरी देख उसकी आँखों से आँसू टपकने लगतें है जो सब के सामने अपनी बेटी से मिल भी नही सकती। कनी अपनी अम्माँ से कहती हैं आप घर चलो मैं दादी को मना लूँगी। तभी अम्माँ कहती हैं " तेरी शादी में जरूर आऊँगी, तेरी दादी दरवाजे से घुसने भी नहीं देगी न, तो दरवाजा धकिया कर आऊँगी, कहते अम्माँ की आँखें टपकने लगीं। "अम्माँ आप घर क्यों नहीं आ सकती ?" कनी ने अम्माँ के आँसू पोंछते हुए पूछा। "तू बड़ी हो जाएगी न, तो सब समझ जाएगी। औरत की मजबूरी, औरत बनने पर ही समझ में आती है, अभी तो तू छोटी है, बच्ची है।"[74] कनी की अम्माँ के बस का वक़्त हो गया था, दोनों रोते हुए एक दूसरे से विदा लेती हैं।

कनी की परवरिश दादी करती हैं। घर मे बानो आपा के आने से कनी को अच्छा लगता है। बानो दादी के भाई की बेटी है जो कुँवारी माँ बनने वाली है। जिससे बानो प्रेम करती थीं वो बंटवारे के समय पाकिस्तान चला गया। कनी बानोंआपा से दिल से जुड़ जाती हैं आखिर दोनों का दुःख का रिश्ता था। कनी बानो से कहती हैं समझदारी, दुनियादारी सब हालात सीखा देते हैं दादी के साथ रहकर मैं सब समझने लगी हूँ, दुःख को मैं और अच्छे से समझती हूँ, दादी जैसे जड़ी बूटियों को समझती हैं, वैसे ही मैं दुःख को समझती हूँ।

बानो आपा को प्यार करने की सजा भुगतनी पड़ती है। उसके बच्चे के जन्म के पश्चात उसे दिखाए बिना किसी को दे दिया जाता है। घर में लोग उसे किसी तुच्छ सामान की भाँति समझतें है। उसकी शादी कुलसुम के भाई से करवा दी जाती है, जो कुरूप निकम्मा है। बानों सुन्दर, सुशील, पढ़ी लिखी, गुणवान है, लेकिन उसको प्यार करने इतनी बड़ी सजा मिली थी। अंतिम में उसे लावारिस मौत मिलती है। बेचारी गरीबी में अपने बच्चों को पालती थी। आखिरकार कितना दुःख सहती, वो भी तो एक इंसान थी। कितना दुख सहती ? पागल होकर दिन-भर घूमती रहती थी। बच्चे उसपर हँसा करते थे उसका पीछा करते थे। एक दिन ट्रक के नीचे आ गई और मृत्यु हो गयी। लोगों ने उसे पुलिस के सामने पहचानने से इन्कार कर दिया था। कोई पुलिस के चक्कर में पड़ना नहीं चाहता था। बेचारी का बहुत बुरा नसीब था। बेचारी को दुःख के सिवा कुछ नहीं मिला।

दादी, गनपत काका के बारे मे बताती हैं। उन्होंने दो ब्याह किया है। पहली पेट से थी जच्चा-बच्चा दोनों की मृत्यु हो जाती है। उनकी माँ का रो रो कर बुरा हाल था। वंशबेल में गांठ पड़ गयी है। वंश चलाने के लिए संतान तो चाहिए, उसके लिए ब्याह करना भी जरूरी है। घर में सब गणपत काका के पीछे पड़ जाते हैं। गनपत काका ने कह दिया था कुँवारी लड़की से ही ब्याह करूँगा। आखिर में कानपुर में कुँवारी और सुंदर कन्या मिल गयी। दूसरा ब्याह भी घोड़ी, बैंड बाजा के साथ धूमधाम से किया। दूसरी पत्नी से तीन बेटे- बेटियाँ हैं।

एक दिन कनी, दादी के कहने पर गनपत काका के यहाँ धान की रकम लेने जाती है। गनपत काका कनी को अंदर बुलाते हैं। घर में कुत्ता ना घुस जाये कहकर दरवाजा बंद कर लेते हैं। अंदर किसी को ना देख कनी काकी के बारे में पूछती है। काका बताते हैं वो मायके में शादी में गयी है बच्चे भी साथ गये हैं। कनी,गनपत काका के शैतानी इरादे को समझ जाती हैं डर से चेहरा पिला पड़ जाता हैं। काका उसे पकड़ लेते हैं पुरी ताकत लगाकर कनी अपने आप को बचाने की

कोशिश करती हैं और वहाँ से बचके भाग निकलने में कामयाब हो जाती हैं। कनी जिस घर में बचपन से आती-जाती हैं आज उसी घर में भेड़िया देखा था उसने।

बानो आपा कनी को समझती हैं " अब तू ज्यादा मत सोच कनी, उधर से ध्यान हटा ले, जितना सोचेगी बुरा लगेगा। हर लड़की को अच्छे-बुरे समय में यह आफत झेलना पड़ता है, इससे बचकर रहना, अपनी हिफाजत करना भी लड़की को आना चाहिए। कमजोर नहीं पड़ना चाहिए। कमजोर को ही लोग अपना शिकार बनाते हैं। दुनियाँ तो जंगल है, जिसमें ढेर खूँखार जानवर रहते हैं और इसी जंगल की पगडंडी से हमें रोज गुजरना भी है, इसलिए सतर्क रहकर अपने को इन जानवरों से बचाना भी आना चाहिए। लड़कियों को तो यह भेड़ बकरियां समझते हैं तेरी दिलेरी पर दंग हूँ, दुष्ट राक्षस के हाथ से छूटकर आई है।"[75]

कुलसुम, कनी की सहेली, बहन और शुभचिंतक सब कुछ हैं। दोनों अपने सुख-दुःख आपस में बाटती हैं। कुलसुम का ब्याह कच्छी सेठ के साथ तय होता हैं। पैसे के लोभ में आकर उसके अब्बा अधेड़ उम्र के आदमी से उसका ब्याह करवाना चाहते हैं जिससे कि उनके धंधे में भी मदद हो जाये। कुलसुम भूख हड़ताल करती हैं रोती है, तड़पती है, आखिर में मजबूरन उसे ब्याह के लिए मानना ही पड़ता है।

कनी जब सयानी होती हैं दादी अपने जीते जी अपनी आँखों के सामने उसका ब्याह करवाना चाहती है। कनी, बानो, कुलसुम, सुगराबी सब चौक बाजार में मुमताज खाला के यहाँ दशहरा देखने जाते हैं। वहाँ कनी की मुलाकात सादिक से होती हैं। कनी को देखकर सादिक उसे पसंद करने लगता हैं। वो मुमताज खाला के भाई का बेटा हैं जो अलीगढ़ में पढ़ाई करता है। उनका मुम्बई में शिप का कारोबार हैं। उनके कई जहाज चलते हैं। खानदानी रईस लोग हैं। सादिक और कनी के दादा दोस्त थे, दोनों हैदराबाद में साथ पढ़ते थे। सादिक दादी से मिलने के बहाने कनी से मिलने आता हैं। सादिक को देखकर दादी बहुत खुश होतीं हैं। वह सोचती हैं, घर

बैठे बैठे ही इतना अच्छा लड़का मिल गया। सादिक की फूफी सादिक का रिश्ता लेकर कनी के घर आती हैं, और दादी को भी सादिक पसंद है और वो ब्याह की मंजूरी दे देती हैं।

ब्याह की तैयारियाँ सुरु हो जाती हैं, कनी अपने ब्याह में अपनी माँ को बुलाना चाहती हैं। दादी कनी से कहती हैं "कनी बेटी, ठीक है अपनी अम्माँ को बुला ले मैं तेरी खातिर हर कड़वा घूँट पी सकती हूँ। सारी उम्र मैंने जिस हठ को माथे पर राजा के ताज की तरह चढ़ाये रखा, आज उसे उतारती हूँ। तेरी खुशी के लिए मैं हर काम कर सकती हूँ।...तू तो मेरी जिन्दगी की पासंग है। जीवन के तराजू के दोनों पल्ले दुःख और सुख तुझसे ही तो जुड़े थे।"[76] आखिर कनी और सादिक एक हो जाते हैं - "सादिक की ज़िद और खानदान याद हवा में टुन-टुन घंटी सी बजी और मुस्कुरा उठी। आखिर सादिक ने उसे अपना बना ही लिया। दादी तक ने सादिक का साथ दिया था।"[77] लेकिन कनी को अभी भी अपनी माँ का इंतजार होता हैं लेकिन उसका इतंजार खत्म होता है। भीड़ के सामने कनी ने अपनी अम्मा को देखा तो दौड़कर गले से लिपट गयी। अम्मा और उनके पति दोनों ने उसके सर पर हाथ रख आशीर्वाद दिया। और कहते हैं " कनी, यह तुम्हारी अम्माँ के जेवर हैं यह तुम्हारे लिए हैं। तुम्हारी अम्माँ ने बड़ा संभाल कर रखा था देख लो वही तुम्हारे घर के पुराने गहने हैं नए मेरे खरीदे हुए हैं।..."माँ के गहने बेटी के लिए ही तो होते हैं," अम्माँ ने बहुत प्यार से उसे दुलार कर कहा।..." बेटी, मैं तेरा बाप नहीं हूँ, पर बाप का हक अदा करूँगा,"अम्मा के शौहर ने कहा। कनी भीतर से दहल उठी। उसके होठ फड़फड़ाये और बहुत धीरे से उसके होठों से फूटा-अब्बा.... आप बहुत अच्छे हैं।"....प्यार-ममत्व-सुख-अधिकार-ब्याह-सम्मान-दुलार सब एक साथ कैसे उसकी झोली में आ गये। इन अच्छे रंगों के प्रभाव ने कैसे बुरे रंगों को दूर कर दिया था।"[78] सबकी आँखे नम हो गयी थी। अचानक ब्याह का घर मातम में बदल गया। अपने सारे कतव्यों को निभाकर दादी स्वर्ग सिधार गयी। सभी अचंभित रह गये की ब्याह की खुशी मनाये या मृत्यु पर रोये।

मेहरुन्निशा परवेज जीने इस उपन्यास में नारी के दुःख, दर्द, पीड़ा को बहुत ही संवेदनशीलता से व्यक्त किया है। कनी अपनी माँ और दादी को मिलने का पासंग बनती हैं। यहाँ नारी पात्रों के परेशानी, पीढ़ा, उनकी छटपटाहट देखकर आँखे नम हो जाती हैं। भारत-पाकिस्तान का प्रभाव किस प्रकार सामान्य लोगों पर पड़ा। बूढ़े लोगों की विवशता,मुस्लिम संस्कृति आदि का चित्रण प्रस्तुत किया गया हैं।

समरांगण (सन् 2006)

समरांगण मेहरुन्निसा परवेज़ का बहुत प्रसिद्ध उपन्यास हैं। " मेहरुन्निसा ने बेटे की यादों को न भुलाते हुए 'समरलोक' नाम की पत्रिका निकाल ली और न भूलने वाले बेटे के साथ साहित्य को जोड़ते हुए अपने गम को साहित्य का गम बना दिया सिर्फ यही नहीं पत्रिका निकाल कर तसल्ली नही हुई तो समरांगण लिख दिया बेटे के नाम एक अद्भुत उपन्यास है।"[79] यह उपन्यास मनुष्य के जीवन के अनेकों पहलुओं को सूक्ष्मता से उजागर करता है मनुष्य सत्ता-संपत्ति की लालसा में पढ़कर किस प्रकार अपने और पराये का भेद भुला देता है। इसका यथार्थ चित्रण लेखिका ने इस उपन्यास में किया है। यह मेहरुन्निसा परवेज़ का प्रथम उपन्यास है, जो नायक प्रधान है। इस उपन्यास की मुख्य भूमिका में गोपीलाल है, जिसके जीवन के इर्द-गिर्द ही कथा चित्रित होती है। साथ-साथ बंगाली सिंह, मिट्ठू सिंह, सुहासिनी, लता, पृथा और बूँदाजान जैसे पात्रों का उल्लेख सार्थकता से किया गया है।

गोपीलाल कश्मीरी पंडित है। दिल्ली में उनका पुश्तैनी व्यवसाय मिठाई की दुकान का है। जो अपनी नव विवाहिता पत्नी को लेकर यहां आते हैं, परंतु ग़दर फैलने के कारण उन्हें यहां से पलायन करना पड़ता है । दिशाहीन गोपीलाल को बंगाली सिंह का साथ मिलता है । जो पिंडलियों का सरदार है। बंगाली सिंह, गोपीलाल को जबलपुर नर्मदा तट पर पहुंचाते हैं। लेकिन जबलपुर गोपीलाल के लिए अंजान शहर है। इसलिए बंगाली सिंह अपने परिचय मिठ्ठू सिंह का पता गोपीलाल को देते हैं। मिट्ठू सिंह गोपीलाल और उनकी पत्नी सुहासिनी को अपने ही घर में

रहने को जगह देते हैं। मिट्ठू सिंह और उनकी पत्नी लता बहुत ही सरल स्वभाव की हैं। उनकी कोई संतान न होने के कारण वह गोपीलाल को अपने संतान की तरह ही समझने लगते हैं। उनकी पत्नी लता का भी गोपीलाल और उनकी पत्नी के साथ भावात्मक तौर पर रिश्ता धीरे-धीरे गहरा होते चला जाता है। यहाँ मिट्ठू सिंह गोपीलाल को व्यवसाय में सहारा देते हैं। गोपीलाल का व्यवसाय धीरे-धीरे दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की करने लगता है। गोपीलाल के पास धन, संपत्ति, सत्ता, अधिकारी आते ही उन्हें अहं हो जाता है। गोपीलाल स्वार्थी व्यक्ति है जो मिट्ठू सिंह के धन-दौलत को हड़प लेता है। गोपीलाल की पत्नी सुहासनी एक कुशल ग्रहणी थी, जो उम्र भर अपने पति को परमेश्वर मानकर उनके नक्शे कदम पर चलती है। किंतु वैभव संपदा आ जाने के बाद वह सुहासनी को किसी चीज की कमी नहीं होने देते, आखिर कमी होने भी कैसे देते जो लक्ष्मी पैर पसारे हैं उनके पास आई है। वह गड़ा खजाना सुहासनी के हाथ ही तो लगा था। जिसे पति-पत्नी ने किसी को कानों कान पता चलने नहीं देते। इस धन के आते ही सुहासिनी को सभी सुख सुविधा नोकर-चाकर रुतबा सब मुखातिब होता है, किंतु वह अपने पति के प्यार, अपनत्व और अधिकार से उपेक्षित हो जाती है। उसे लगता है। भवन में वह एक सजावट की चीज बन कर रह जाती है। कई-कई दिनों तक पति की एक झलक को तरस जाती है। अतः जब बूँदाजान के बारे में सुहासनी को पता चलता है, तो वह भीतर ही भीतर टूट जाती है, और विचार करती है कि - "जीवन के व्यापारी ने पति का दाम तो बहुत आँका था परन्तु उसका मुल्य बहुत कम आंका था।शायद इस कारण जीवन की हाट जल्दी उठने को थी।"[80]

गोपीलाल की भाँति पुत्र मोहन भी पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होता है। उसे भी भारतीय लड़कियाँ पसंद नहीं लेकिन माता के दबाव के कारण वह पृथादेवी से विवाह करता है। किंतु थोड़े समय के बाद वह अपनी पढ़ाई पूरी करने इंग्लैंड चला जाता है। जब पृथा उसे रोकना चाहती है। तो मोहन उसके मोह-भाव को समझ नहीं पाता और वह तो उसे मूर्ख, गवार समझता है, और कहता है कि "पत्नी को क्या चाहिए। कोठी, कार, गहने, साड़ियाँ, वैभव, नौकर, चाकर

सभी तो है। अच्छी और आदर्श पत्नियाँ इन्हीं में अपना मन लगाती है। पति के पल्लू से बँधे रहने के लिए नहीं होता उसे तो बाहर काम करना पड़ता है। शासन और सत्ता संभालनी है।"[81] पृथा पति द्वारा अपमानित होते हुए भी वह अपने ससुराल की सभी जिम्मेदारियां ईमानदारी से संभालती है। वही बूँदाजान गोपीलाल से ठगी जाने के बाद मुंबई चली जाती है।

इस उपन्यास में गोपीलाल अंग्रेजों के साथ अपनत्व रखते हैं और अपनों के साथ बैर रखते हैं लेकिन जब अंग्रेजों द्वारा उसके पुत्र पर जानलेवा कोशिश की जाती है तभी उन्हें अपने और पराए का फर्क पता चलता है परंतु तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। अपनी संपत्ति, सत्ता, अधिकार त्याग कर जिन बंगाली सिंह के साथ इस शहर में आया थे। उन्हीं के साथ दिल्ली वापस चले जाते हैं। यह उपन्यास इतिहासिक, सामाजिक, राजनीति, सांस्कृतिक और पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। समरांगण उपन्यास सभी दृष्टि से सफल उपन्यास है।

मेहरुन्निशा परवेज़ का कहानी साहित्य

मेहरुन्निसा परवेज़ मशहूर लेखिका हैं, कहानी लेखिकाओं में उनका स्थान प्रतिष्ठित हैं। अपनी कहानियों में जीनव के कड़वे सत्य को प्रस्तुत किया हैं। अपनी कहानियों की शुरुआती दिनों के बारे में कहती हैं - "मैं ने पहली कहानी लिखकर धर्मयुग को भेज दिया था, जिसके लिए सत्तर रुपए मिले, जो आज भी बैंक में चलते हैं।"[82] डॉ दीपिका रानी कहती हैं कि - "मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियों का परिवेश मुख्यतः मुस्लिम समाज का मध्य और निम्न मध्यवर्ग ही रहा करता है। मध्यवर्ग की टूटन, उस वर्ग की समस्याएँ और दैनिक जीवन में धर्म का महत्व वे बड़ी सहजता और वास्तविकता से वर्णित करती हैं।"[83] उपन्यास तथा कहानी लेखिका के जीवन को अपने मे समेटे हैं, वे स्वयं लिखती हैं - " मेरी कहानियाँ अपना परिचय खुद ना दे पायीं तो समझूँगी मैं ने जो कुछ लिखा, जो पाया सब झूठ के सिवा कुछ नहीं।"[84] मेहरुन्निशा परवेज ने अपने कहानी संग्रहो में नारी जीवन के अलग-अलग समस्याओं, परिस्थितियों पर लिखा है और आगे निरन्तर लिखती रहती हैं जो कहानी संग्रहो तथा पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहती हैं।

हिंदी के विभिन्न आलोचकों ने उनकी कहानियों की प्रशंसा की है। डॉ.मंजु शर्मा उनकी कहानियों की कीर्ति करते हुए कहती हैं कि - "वे निम्न मध्य वर्गीय व गरीब परिवारों की समस्याओं को अपनी कहानी में बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करती हैं।"[85] डॉ. मालती आडवानी के अनुसार "इनकी कहानियों में परिवेश बहुत जीवंत होकर उभरता है। वातावरण की पकड़ और तथ्य की सजीवता के कारण कहानियाँ सीधे-सीधे पाठक के अंतर में उतरती चली जाती हैं। भाषा का चुनाव देशकाल, परिस्थिति के अनुसार और पात्र के आधार पर होने के कारण पाठक का परिचय उस तथ्य से सहज होता है, जो लेखिका को अभिप्रेत है। इन सभी विशेषताओं के कारण उनकी कहानियों की एक अलग पहचान है।"[86] डॉ. मीना जोशी के अनुसार "मानवीय जीवन से जुड़े बड़े ही नाजुक प्रश्नों को मेहरून्निसा ने बड़ी कुशलता से प्रस्तुत किया है। महिला होने के नाते उन्होंने कभी अपने इस रुप के कहानियों पर हावी नहीं होने दिया। उनकी कहानियों का तथ्य मुख्यतः जीवन संघर्ष से जुड़ा है मध्य वर्ग एवं मुख्यतः निम्न वर्ग के अस्तित्वगत जीवन संघर्ष का चित्रण और उनमें आँचलिकता का पुट आप की विशेषता है।"[87] उनकी कहानियों का अध्ययन करने पर यह स्वाभाविकता सरलता से देखने को मिलती है।

आदम और हव्वा (सन्1972)

मेहरुन्निसा परवेज़ की समग्र कहानियों का केंद्र परिवार तथा पारिवारिक संबंध है। इस कहानी संग्रह की विभिन्न कहानियों के माध्यम से भी लेखिका ने पारिवारिक जीवन विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया है। 'त्योहार' कहानी में आर्थिक तंगी के कारण शानो और उसकी माँ बड़े ही दुःखद दिन गुजारते है, लेकिन जब ईद आती है, तो उन्हें खुशी की बजाये दुःख अधिक होता है। क्योंकि उन्हें लगता है कि त्योहार गरीबो का मज़ाक बनाने के लिए ही आते है। 'सीढ़ियों का ठेका' कहानी में लेखिका ने भीख मांगने वालों की जिंदगी को अपनी कहानी का विषय बनाया है। करीमन अपने नाती करीम के साथ रहती है। उसकी पत्नी नानी को दो वक़्त का खाना भी ठीक से नहीं देती, बल्कि भीख मांगने को कहती है। करीमन आर्थिक मजबूरियों के कारण

भीख मांगकर अपना गुजारा करती है। 'शनाख्त' यह आर्थिक विवशता और बेबस माँ-बेटी की कहानी है। शराब के नशे में बाप अपनी ही बेटी को वाशना का शिकार बनाना चाहता है। माँ अपनी बेटी को बचा लेती है,बेटी के प्रति बाप के घोर अपराध को कभी छमा नही करती, यहाँ तक की मृत्यु के पश्चात उसके लाश को पहचान ने से भी इंकार कर देती है। 'सिर्फ एक आदमी' इस कहानी में मेहरुन्निसा परवेज़ जी ने रिटायर आदमी की क्रूरता को दर्शाया है। जो अपने ही घर में अपने ही पत्नी-बच्चों को घुट- घुट कर जीने पर मजबूर कर देता है। यहाँ तक कि बेटी अपने प्रेमी से ब्याह नही कर सकती, अतः बेटी अपने प्रेमी से पिता की मृत्यु तक इंतजार करने को कहती है। 'अपने अपने दायरे' कहानी में लेखिका ने दाम्पत्य जीवन में कलह का कारण विवाहेतर संबंध को बताया है। 'चमड़े का खोल' कहानी में पत्नी के दमें की बीमारी के कारण पति दूसरा ब्याह कर लेता है। यहाँ लेखिका ने पत्नी की वेदना और असुरक्षा के ख्याल को प्रतिपादित किया है। 'तीसरा पेंच' कहानी में पुरूष की मानसिकता तथा नारी देह के आकर्षण का अंकन किया है। 'उसका घर' एक बीमार,लाचार तथा उपेक्षित बूढ़े आदमी की कहानी है। जो जीवन भर मेहनत मजदूरी कर अपने बच्चों को पालता वहीं बच्चे बुढ़ापे में बीमारी होने पर उसे बात-बात पर फटकारते है, तिरस्कृत करते हैं। 'एक और सैलाब' में एक ऐसी महिला का वर्णन किया है, जो आर्थिक परेशानी से बेबस होकर अपने ही पति को मार देती हैं। 'अकेला गुल मोहर' कहानी में पारिवारिक विघटन का वर्णन है। अपने स्वार्थ के लिए भाई अपने कर्तव्यों से उदासीन होकर बहन की जिंदगी को दुःखी बना देता है। 'बंजर दुपहर' दाम्पत्य जीवन की निरसता और एकाकीपन को प्रस्तुत किया है। 'भोगे हुए दिन' एक शायर के जीवन का चित्रण है। जो अपने समय के मशहूर शायर थे, किन्तु आज उन्हें एक-एक रोटी के लिए मशक़्क़त करनी पड़ती है। 'खाली आँखों की पीड़ा' पति-पत्नी के आपसी संबंधों में भरोसे के अभाव को प्रस्तुत किया। 'जाने कब' कहानी मे माता-पिता के पश्चाताप,दुःख को प्रकट करती है जो अपनी बेटी का ब्याह सिर्फ इसलिए नही करा पाते क्योंकि वह अशिक्षित है। 'विद्रोह' नीना पारिवारिक जिम्मेदारियों के

कारण विवाह नही कर पाती है। उसकी हताशा,प्रतीक्षा, आकांक्षाओं तथा अकुलाहट को बड़ी ही बारीकी से चित्रित किया है। 'बंद कमरों की सिसकियाँ' एक नि:संतान स्त्री की छटपटाहट को व्यक्त किया है। 'वीराने' एक असफल प्रेम कहानी है। 'छोटे मन की कच्ची धूप' एक विधवा स्त्री की कहानी है। जो अकेले ही अपने बच्चों के लिए, जीवन की कठिनाइयों से डट कर लड़ने को तैयार होती हैं। 'आदम और हव्वा' पुनर्विवाह की समस्या को उजागर किया है। इस कहानी संग्रह में नारी से संबंधित विभिन्न समस्याओं को बड़ी सूक्ष्मता से दर्शाया गया है।

टहनियों पर धूप (सन् 1977)

इस कहानी संग्रह में कुल बारह कहानियाँ समाहित की गयी है। हर कहानी में दुःख-दर्द की झलक दिखाई देती है। 'हत्या एक दोपहर की' यह एक विधवा माँ और उसके बेटे की कहानी है। इस कहानी में असहाय स्थिति, मानसिक द्वंद्व,असुरक्षा भाव और आत्मनिर्णय का प्रभावी चित्रण प्रस्तुत किया है। विधवा के मन में अनेकों इच्छाओं का जन्म होता हैं, किन्तु नूपुर अपनी सभी इच्छाओं का त्याग कर सिर्फ अपने बच्चे के लिए जीने का निर्णय लेती है। 'नया घर' एक लाचार गरीब स्त्री की कहानी है जो अपना नया घर बनाना चाहती है। जिसके लिये सरकारी जमीन अलर्ट करवाना चाहती है। यहाँ लेखिका ने सरकारी काम-काज तथा भ्रष्ट सरकार का उल्लेख किया है। 'गिरवी रखी धूप' यह एक रिटायरमेंट आदमी और लालची बच्चों की कहानी है। बच्चे रिटायरमेंट के बाद अपने पिता की अवहेलना करते हैं, किन्तु उनकी पेंशन से मोह रखते है। 'पितृशोक' कहानी में एक बेटे के अहंकार को दिखाया है। जिसे पिता की मृत्यु पर कोई दुःख नही होता,बल्कि मृत्यु पर आना भी उसके लिए गौरव की बन जाती है। 'कयामत आ गयी है' विवाह संबंधित पुरानी रूढ़ियों से नई पीढ़ी किस तरह परिवर्तित हो रही है। उसमें आये बदलाव और मुस्लिम संस्कृति एवं परिवेश और उसकी समाजिक विडंबनाओं को प्रस्तुत किया है 'आतंक भरा सुख' यह आर्थिक विपन्नता के कारण संघर्ष करते बारह-तेरह वर्ष के बच्चे की कहानी है। जो नौकरी की तलाश में इधर-उधर भटकता रहता है। यहाँ गरीबी, लाचारी की भीष्ण

ज्वलंत चुनौतियों को लेखिका ने चित्रित किया है । 'खामोशी की आवाज' दांपत्य जीवन में आपसी समझौते के अभाव में अलगाव की स्थिति को उजागर किया गया है । 'पाँच जन्म पाँच रुप' पत्नी-पत्नी के प्रेम तथा पत्नी की मृत्यु के पश्चात पति की मनोदशा का चित्रण है । 'खुरचन' मुस्लिम परिवेश में यह कहानी लिखी गयी है । इसमें अंतर जातीय विवाह के कारण परिवारिक कलह देखने को मिलता है, साथ ही नयी पढ़ी और पुरानी पीढ़ी की धार्मिक मान्यताओं के भेद को प्रस्तुत किया है । 'आरजू के फूल' कहानी के माध्यम से मेहरुन्निसा जी ने युद्ध पर गये सैनिक की पत्नी की व्यथा का सुंदर वर्णन किया है । 'नंगी आँखों वाला रेगिस्तान' अनमेल विवाह की समस्या तथा पुरुष द्वारा छली गयी नारी स्थिति का चित्रण किया गया है । 'टहनियों पर धूप' कहानी में नारी को पुरषों द्वारा केवल भोग की वस्तु के रुप में प्रस्थापित किया गया । जहाँ नारी की किसी भी भावना, वेदना को समझा नही जाता, बल्कि नारी को केवल देह रुप में ही समझा जाता है । इसके अतिरिक्त उसका कोई स्थान नहीं है ।

यह सभी कहानियाँ नारी की मजबूरियों, विवशता, बिखरता दाम्पत्य जीवन तथा मनुष्य की घटती संवेदना आदि विभिन्न विषयों पर चर्चा की गयी है ।

गलत पुरुष (सन् 1978)

इस कहानी संग्रह के अंतर्गत सोलह कहानियाँ संग्रहीत है । 'टोना' अंधश्रद्धा को व्यक्त करने वाली कहानी है । नायिका पर लाँछन लगाया जाता है,पति उसे सच मान लेता है। पति पर संदेह का टोना लग जाता है और उसको उतारना नायिका के लिए मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। 'दूसरी अर्थी' कहानी में लेखिका ने परिवार के प्रमुख की यदि अचानक मृत्यु हो जाये, तो उस परिवार की स्थिति कैसी हो जाती है उसका ज्वलंत चित्रण प्रस्तुत किया है । 'पांचवी कब्र' गरीबी के घिनौने सत्य को उजागर किया है । जहाँ किसी की मृत्यु पर शोक की बजाये खुशी मनाते लोगों का जिक्र है ये लोग कब्र खोदने का काम करते है उन लोगों के घर पेट भर खाना उसी दिन मिलता है, जिस दिन किसी के घर मृत्यु होती है । 'टूटने से पहले' कहानी में निम्न मध्यवर्गीय

परिवार की विड़ंबना को दिखाया गया है। परिवार में एक अकेला व्यक्ति कमाने वाला है और उसपर रिटायरमेंट अठ्ठावन की बजाये पचपन पर तय हो जाने पर घर के लोगों की मानसिक स्थिति कैसी हो जाती है उसका प्रभावी चित्रण पस्तुत किया गया है। 'आकृतियां और दीवारें' ईसाई परिवार के विघटन की कहानी है। जो रहते तो एक घर में एक साथ है, किंतु धीरे-धीरे उनमे अलगाव की भावना उत्पन्न होने लगती है और विघटन होने लगता है। 'रिश्ते' मुस्लिम परिवेश में लिखी गयी कहानी है। इस में संतान से अधिक महत्व अर्थ को दिया है, और साथ ही परिवार नियोजन सबंधी प्रश्नों को भी उठाया गया है। 'सलाखों में फंसा आकाश' इस में तबेदिक की बीमारी से ग्रसित लड़की की मन: स्थिति को चित्रित किया है। जो विवाहित है लेकिन उसकी बीमारी के कारण उसका पति उसे मायके छोड़ जाता हैं। और मायके में गरीबी,दरिद्रता के कारण माँ भी उसे बोझ समझ कर उससे दूरी बना लेती हैं। 'बीच का दरवाजा' पति-पत्नी के रिश्ते में किसी तीसरे के आने से दूरी आ जाती है किंतु दोनों में अलग हो जाने के बावजूद मन,प्रेम,आकर्षण खत्म नहीं होता। 'बिके हुये क्षण' इस कहानी के अंतर्गत दो संस्कृतियों की भिन्नता को उजागर किया है। 'साल की पहली रात' मेहरुन्निसा परवेज़ जी ने इस कहानी में धन दौलत के स्वार्थ में लिप्त भाई अपनी बहन की ही बली चढ़ा देता है, तो माँ अपनी धार्मिक् कट्टरता के कारण माँ, बेटी के सुख तक को महत्व नही देती। 'पसेरी भर जवानी' इस कहानी में गरीब करीगरों के वास्तविक जीवन, शोषण, यथार्थ तथा निर्धनता के कारण अपनी आबरू तक दाव पर लगाने को तैयार स्त्री को प्रस्तुत किया है। 'जंगली हिरनी' आदिवासी लड़कियों के स्वच्छंद प्रेम तथा अन्याय की कहानी है। 'जावेद के खत' यह एक पत्रात्मक शैली में लिखा गया है। कहानी का नायक जावेद को राजनीतिक गतिविधियों के कारण देश में बँटवारे के समय उसे पाकिस्तान जाना पड़ा। उसके बावजूद उसका लगाव, अपनत्व भारत से वैसा ही है जैसे भारत में रहने पर था। उसका अजीज़ दोस्त शमीम जो भारत में ही रहता है।दोनों पत्रो के माध्यम से जुड़े रहते हैं। 'बंटवारे की फांस' भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय हुए,साम्प्रदायिक दंगो को प्रस्तुत किया है। लोगों

का परिवार बिखर कर रह जाता है,कई पति अपनी पत्नी से तो कई माता-पिता अपने बच्चों से बिछड़ जाते हैं। 'मुंडेरों की दुपहर' दाम्पत्य जीवन में कलह का कारण पति के होते हुए पत्नी किसी दूसरे पुरुष से संबंध रखती है। और उसको इस बात का रत्ती भर अफ़सोस नही होता। 'गलत पुरुष' शिप्रा पैंतीस वर्ष की नोकरी पेशा नारी है। पहले करियर बनाने में इतनी व्यस्त थी, की किसी से प्यार के लिए समय नहीं था और जब विनय से प्यार हुआ भी तो वह नपुंसक निकला। इस कहानी में लेखिका ने नारी जीवन की यातना तकलीफ तथा नपुंसक व्यक्ति की मानसिक स्थिति को चित्रित किया गया हैं। इस प्रकार संग्रह की सभी कहानियाँ जीवन की भिन्न-भिन्न समस्याओं को प्रस्तुत करती है।

फाल्गुनी (सन् 1978)

इस कहानी संग्रह के अंतर्गत सात कहानियाँ संग्रहीत हैं। इनकी विशिष्टता यह है कि इन सभी कहानियों के माध्यम से मेहरुन्निसा परवेज़ जीने स्त्री-पुरूष के संबंधों पर प्रश्न चिन्ह लगाया है। पुरुष पहले स्त्रियों को बहला फुसला कर उसका विस्वास जीतता है। फिर उसपर अत्याचार करता है। स्त्री अपना सब कुछ निछावर कर समर्पण कर देती है फिर भी पुरुष उसे सक भरी नजरों से देखता है स्त्री की विवशताओं तथा मुस्किलों की चर्चा इस कहानी संग्रह में की गयी है। 'आकाशनील' इस कहानी में विवाहित नारी के उलझन को व्यक्त किया है। नायिका तरु जज है। पति शराबी तथा अय्याशी है। तरु इतने ऊँचे पद पर है,उसके बावजूद उसे ससुराल में पति द्वारा मान-सम्मान नहीं मिलता, और वह नातो पति के साथ रह सकती है ना ही उसे छोड़ सकती हैं। कहानी अंत तरु के विलाप से होता है। 'रावण' कहानी एक विवाहिता के यातनामय जीवन का चित्रण किया है। जिससे उसका विवाह होता है, वह नपुंसक पुरूष है। किन्तु वह नायिका शुभी को तड़पना चाहता है इसलिए शुभी को तलाक नही देता। शुभी की मुलाकात प्रशांत से होती हैं और वह उससे प्रेम करने लगती है। प्रशांत भी शुभी को पसंद करने लगता है, पर लोक-लाज, मर्यादा को लांघना प्रसांत के बस की बात नहीं थी वह भी डरकर शुभी को छोड़कर भाग जाता हैं।

उसी दिन से शुभी रावण को अपना आदर्श पुरूष मान लेती हैं । उसके जीवन की इतनी कठिनाइयाँ हैं से पार करना किसी राम के बस में नही वो तो कोई रावण ही कर सकता है। 'चुटकी भर समर्पण' पुरुष द्वारा छली गयी नारी का चित्रण किया गया है साथ ही माँ बनने की तीव्र लालसा को प्रस्तुत किया है। 'कनीबाट' आदिवासी बोली भाषा में कानीबाट पगडंडी को कहते हैं। कहानी में पुरुष नारी को अपने मतलब के लिए किस प्रकार प्रयोग करता है उसका जीवंत चित्रण है। और आदिवासी लोगों के रूढ़ि वादी परंपराओं का विस्तार पूर्वक वर्णन इस कहानी में देखने को मिलता हैं। 'बौना मन' कहानी एक विधवा स्त्री की दयनीय स्थिति का चित्रण किया गया है। नीतू कम उम्र में विधवा हो जाती है और उसपर दो बच्चों की जिम्मेदारी भी होती हैं। उसे बहुत संघर्ष करना पड़ता है। परिवार के मना करने के बावजूद वह अपने जीवन का निर्णय खुद करती हैं। अपने और अपने बच्चों के भविष्य के लिए दूसरा विवाह करने का फैसला करती हैं। 'ओस में डूबा गुलाब' एक ऐसे व्यक्ति की कहानी हैं जो अपने ऐशो आराम के लिये अपने बीबी बच्चों को जिल्लत भरी जिंदगी जीने पर मजबूर कर देता है। 'फाल्गुनी' कहानी अनमेल विवाह के कारण छटपटाती नारी जीवन की समस्याओं का वर्णन है। जो पति से छिपकर अपने प्रेमी से भी संबंध रखती हैं और उसके बच्चों को भी जन्म देती हैं। किन्तु ताउम्र पति से अपने अपराध बोध लेकर डरती है। इस प्रकार सभी कहानियों में नारी की विभिन्न परिस्थितियों, दुःखो, कठिनाइयों को प्रस्तुत किया गया है। नारी होने के नाते मेहरुन्निसा परवेज़ ने इन सभी स्त्री पात्रों के दुःख-तकलीफों को अत्यंत भावुकता से प्रस्तुत किया है।

'अंतिम चढाई' (सन् 1982)

इस कहानी संग्रह के अंतर्गत सात कहानियाँ संग्रहीत है। 'अंतिम चढाई' कहानी में मेहरुनिस्सा परवेज़ ने दाम्पत्य जीवन में विघटन को प्रस्तुत किया है। माला का पति जितेन उसे प्रताड़ित और अपमानित करता है। वह अपने पति से परेशान होकर तलाक ले लेती हैं। उसके बाद वह रितेश से ब्याह कर लेती हैं, रितेश उसको प्यार और सम्मान के साथ रखता है। लेकिन

दोनों की कोई संतान नही होती,उसका मलाल रितेश को भी होता है। वह हमेशा अपने बच्चे के लिये तड़पती रहती हैं क्योंकि जितेन उसे अपने बच्चे से मिलने नहीं देता। 'अयोध्या से वापसी' पति-पत्नी के बीच में कलह का कारण दोनों में विश्वास के अभाव को प्रस्तुत किया है। राजेंद्र अपनी पत्नी नीरा पर बात- बात पर सक करता है। उसे पता है नीरा के माता पिता भी उसका साथ नहीं देंगे इसलिये वह उसे और परेशान करता है। वह अपने रिश्ते से तंग होकर राजेंद्र को छोड़कर चली जाती है। 'बूँद का हक' दाम्पत्य जीवन में तनाव तथा एक माँ की विवशता के साथ पति के घर को छोड़ आई स्त्री की अवस्था को चित्रित किया है। 'गुरु मंत्र' कहानी में आदिवासी निम्न परिवरों की मान्यताओं, रीति- रिवाजों, उनकी संस्कृति तथा गरीब लोगों के आर्थिक विपन्नता को प्रस्तुत किया है। साथ ही सबसे अधिक मातृत्व को महत्व देती हैं। इसके लिए वह कुछ भी कुर्बान कर सकती हैं इसका वर्णन किया गया है। पति पर राज करना है तो अपने से अच्छे मरद से ब्याह नही करना चाहिए। अपने से कम अच्छे से ब्याह करने से पति को जैसे चाहे वैसे नचा सकती है। कहानी में यह गुरुमंत्र दिया गया है।'अपनी जमीन' कहानी में आर्थिक विपन्नता, पुत्र-पीड़ा तथा भारतीय समाज में आज भी बेटी से अधिक बेटों को महत्व दिया जाता है, इसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया गया है। 'पत्थरवाली गली' कहानी में आर्थिक कठिनाइयों तथा स्त्री शोषण का प्रभावपूर्ण चित्रण किया है। नायिका जेबा छोटी सी उम्र में चूड़ी पहनाने का कार्य करती है। पड़ोस का दुकानदार उसकी इज्जत से खेलता है, और उस हादसे के बाद जेबा जीवन भर के लिये पत्थरवाली गली में पत्थर सी बन जाती है। लेखिका ने पत्थरवाली गली कहानी में नारी के विषय में उस सोच को चित्रित किया है, जिसके अनुसार नारी सिर्फ उपभोग की वस्तु है। 'जमाना बदल गया है' कहानी में जमींदारी प्रथा तथा तीन पीढ़ी के अंतराल को दिखाया है। जिसमें परंपरा वादी माता-पिता को अपनी नई पीढ़ी से किस प्रकार हताश-निराश होना पड़ता है, उसका जीवंत चित्रण प्रस्तुत किया है। आज की नयी पीढ़ी नये विचारों वाली है उसे जमींदारी परंपरा में कोई रुचि नहीं है किंतु माता-पिता को लगता है सारा परिवार अपनी पुरानी

परंपरा को अपनाएं और संयुक्त रूप से एक जगह एक ही साथ रहें अपनी पुरानी हवेली में, जो आज की पीढ़ी के लिए असंभव है। ये सभी कहानियाँ आपसी संबंधों में आये बिखराव, पुरानी पीढ़ी के प्रति नयी पीढ़ी की उदासीनता, विफल दांपत्य-जीवन,आधुनिक युग में बदलते जीवन मूल्य, सामाजिक शून्यता तथा उसमें छटपटाती स्त्री को भली-भाँति चित्रित इस संग्रह की कहानियों में किया गया है।

एक और सैलाब (सन् 1990)

इस कहानी संग्रह में कुल बारह कहानियाँ संग्रहीत हैं। ये सभी कहानियाँ इस प्रकार हैं - 'एक और सैलाब', 'सिर्फ एक आदमी', 'त्यौहार', 'तीसरा पेंच', 'अपने-अपने दायरे', 'बंद कमरों की सिसकियाँ', 'चमड़े का खोल', 'उसका घर', 'छोटे मन की कच्ची धूप', 'वीराने', 'आदम और हव्वा', 'चुटकी भर समर्पण' ये विभिन्न कहानियाँ मेहरुन्निसा परवेज़ के अन्य कहानी संग्रहों में प्रकाशित हो चुकी हैं।

सोने का बेसर (सन् 1991)

इस कहानी संग्रह में समाहित सभी कहानियों में नारी की मजबूरियों को परत-दर-परत चित्रित किया गया है। नारी की संवेदनशीलता, पवित्रता, मुश्किलों को दिखाने के साथ ही पुरषों द्वारा उसपर होने वाले अन्याय, बर्बरता, धूर्तता, स्वार्थ तथा अपमानित नारी की छटपटाहट अपने वजूद को नष्ट होता देख मानसिक द्वंद्व आदि का जीवंत चित्रण प्रस्तुत किया है। 'सोने का बेसर' कहानी की नायिका कुमकुम, देबू से प्रेम करती है। जिस दिन दोनों की सगाई होती है, उसी दिन देबू को पुलिस गिरफ्तार कर लेती हैं, क्योंकि कॉलेज के चुनाव के समय एक लड़का देबू के हाथों घायल हो जाता है। सभी घरवाले मिलकर तय करते है कि कुमकुम का ब्याह देबू के छोटे भाई श्याम से करवा देते हैं। वह श्याम के बच्चे की माँ बनती है। सात साल बाद जब देबू जेल से छूटकर आता है, तो वह भीतर ही भीतर तड़प उठती है। कुमकुम का शरीर भले ही श्याम का है,

लेकिन मन तो देबू में ही होता है। देबू उसे सोने की बेसर लाकर देता है। वह बेसर पहन लेती है। पति जब बेसर के बारे में पूछता है,उसपर सक करता है तो सास बात को संभाल लेती हैं। दोनों के बीच पिसने वाली कुमकुम का मानसिक द्वंद्व, छटपटाहट, लाचारी को बड़ी ही सूक्ष्मता से दर्शाया गया है। 'क्यों नहीं' कहानी में एक माँ के द्वारा बेटी के आत्मविश्वास को जागृत किया गया है। गुड़िया एक दिनेश नामक IAS ऑफिसर से प्रेम करती हैं। पर दिनेश उसे धोखा देता है। वह अपनी माँ की इच्छा अनुसार अपने किसी करीबी रिश्तेदार की लड़की से शादी कर लेता है। उसमें इतनी भी हिम्मत नही की वह खुद गुड़िया से यह बात बता दें इसलिए वह खत लिख द्वारा गुड़िया को बताता है। गुड़िया खत पढ़कर टूट जाती हैं। लेकिन माँ उसे नया विश्वास, नयी उम्मीद, नयी राह दिखाती हैं। माँ की प्रेरणा, सलाह से गुड़िया IAS की परीक्षा पास कर लेती है। इस कहानी में लेखिका ने नारी को आत्मनिर्भर होने की सलाह दी है। 'ओढ़ना' यह मेहरुन्निसा परवेज़ जी की लंबी कहानी है। कहानी में बाँछड़ा जाती की कुरीतियों को चित्रित किया है। जिसके अनुसार घर की कोई एक बेटी धंधे पर जरूर बैठती हैं। परंपरा अनुसार रानी को जबर्दस्ती धंधे पर बैठाया जात है। लेकिन रानी धंधे पर बैठना नहीं चाहती वह तो किसी की ब्याहता बनना चाहती है। और अपने जाती की कुरीतियों, रूढ़िवादी परंपराओं का विरोध करती हैं। मौका पाकर वह बहुत तेजी से घर से भागती है। क्योंकि वह जानती हैं कि पकड़ी गयी तो काट दी जाएगी। भागकर अपने प्रेमी भैरव के गाँव आ जाती हैं। वहाँ आकर भैरव का दरवाजा खटखटाती है और रुककर नयी नवेली दुल्हन की तरह ओढ़ना ओढ़ लेती हैं और फिर से दरवाजा खटखटाती हैं। 'अपने होने का अहसास', 'जुगनू', पथरवाली गली', 'अंतिम चढाई', 'जमाना बदल गया है', ' खाली आँखों की पीड़ा', 'विद्रोह', 'जाने कब' आदि कहानियाँ मेहरुन्निसा परवेज़ के अन्य कहानी संग्रहों में प्रकाशित हो चुकी हैं।

अयोध्या से वापसी (सन् 1991)

इस कहानी संग्रह में कुल पन्द्रह कहानियाँ समाहित है। जिसके अंतर्गत नारी की वेदना, उसका संघर्ष, असफल दाम्पत्य जीवन, आर्थिक तंगी आदि विषयों को लेकर लिखी गई हैं। 'देहरी की खातिर' कहानी में नायिका पापा (नारी पात्र) को उसकी सौतेली माँ नानीआया उसे वेश्यावृत्ति के लिए विवश करती हैं। पिता, आटो रिक्शा चलाता है, जितना कमाता है उतने रुपय को शराब तथा जुवे में हार जाता हैं। नानीआया ही घर का खर्च चलती हैं। साहब लोगों के घर काम करने जाती हैं, और देह व्यापार भी करती हैं। एक बार जब नायिका गर्भवती होती हैं तो पिता उसे मार मार कर घर से बाहर निकाल देता है। दूर के रिश्ते की काकी उसे पनाह देती हैं। बच्चे के जन्म के पश्चात उसके काका उसके साथ दुष्कर्म करने की कोशिश करते हैं, लेकिन काकी उसे कुल्हाड़ी से मार देती है और वह मर जाता है। काकी का इल्जाम वह अपने सर ले लेती है, क्योंकि काकी को जेल हो जाएगी तो वह और उसका बच्चा बेघर हो जाएँगे,और दर-दर की ठोकरें खायेंगे। कहानी में लेखिका ने घर की महत्वता, मातृप्रेम तथा नारी के त्याग और साहस को पस्तुत किया है। 'जुगनू' कहानी में लेखिका ने संपन्न लोग किस प्रकार धन-संपत्ति, औंधे के कारण किस प्रकार कानून को खरीदते हैं, और कैसे गरीब लाचार लड़कियों का फायदा उठाते हैं इसका जीवंत चित्रण प्रस्तुत किया है। 'अयोध्या से वापसी', 'पत्थर वाली गली', 'बन्द कमरों की सिसकियाँ', 'अपने अपने दायरे', 'सिर्फ एक आदमी', 'त्योहार', 'अकेला गुलमोहर', 'रेगिस्तान', 'एक और सैलाब', 'विद्रोह', 'बंजर दोपहर', 'अपनी जमीन', 'नंगी टहनियाँ', आदि कहानियाँ मेहरुन्निसा परवेज़ के अन्य कहानी संग्रह में संग्रहित हो चुकी हैं।

रिश्ते (सन् 1992)

इस कहानी संग्रह के अंतर्गत इक्कीस कहानियों का समावेश किया गया हैं। इस कहानी संग्रह में लेखिका ने दिखाया है कि आर्थिक विपन्नता के कारण परिवार रिश्तों में कैसे कड़वाहट आ जाती है। व्यक्ति मोह-माया के बंधन में फसकर कैसे अपने रिश्ते को बर्बाद कर देता है साथ

ही रिश्तों की अहमियत को अति सूक्ष्मता से दिखाया है।रिश्तों के बारे में वे कहती हैं - "रिश्ते! इन रिश्तों से हम किस कदर सारी उम्र घिरे रहते हैं। ये रिश्ते किस कदर सारी उम्र मकड़ी के जाल की तरह हमारे इर्द-गिर्द बुने रहते हैं कि हम चाहकर भी इनसे अलग नहीं हो पाते।"[88] 'बंजर दुपहर' कहानी में पति-पत्नी के रिश्ते में आई निरस्ता के कारण दोनों का दाम्पत्य जीवन टूट जाता है। 'भोगे हुए दिन', 'रिश्ते', 'नया घर', 'चमड़े के खोल', 'शनाख्त', 'एक और सैलाब', 'सीढ़ियों का ठेका', 'उसका घर', 'पितृशोक', 'आतंक भरा सुख', 'टूटने से पहले', 'दूसरी अर्थी', 'पाँचवी कब्र', 'पाँच जन्म, पाँच रूप', 'पसेरी भर जवानी', 'बिके हुए क्षण', 'आरजू के फूल', 'अकेला गुलमोहर', आदि कहानियाँ मेहरुन्निसा परवेज़ के अन्य कहानी संग्रह में संग्रहित हो चुकी हैं।

ढहता कुतुबमीनार (सन् 1993)

इस कहानी संग्रह के अंतर्गत तेरह कहानियों का समावेश किया गया है। इस कहानी संग्रह में लेखिका ने नारी व्यथा, पीड़ा, तथा उसके संघर्ष को अंकित किया है। परतंत्र नारी दशा, अनमेल विवाह, सेक्स, प्रेम, अंधश्रद्धा, एवं कुरीतियों से ग्रस्त समाज,आर्थिक विपन्नता, आदि विषयों को इस कहानी संग्रह में लिया गया है। कहानियाँ समाज का आईना होती हैं, और समाज की असंगतियों को उजागर किया गया है। 'ढहता कुतुबमीनार' कहानी की नायिका सपना है जिसका विवाह मेजर राहुल से होता है, लेकिन राहुल ब्याह से पहले ही नीलू नामक लड़की से प्रेम करता है। वह अपने माता-पिता के दबाव के कारण और दहेज की लालच में सपना से शादी करता है। राहुल,सपना से कहता हैं मैं नीलू से शादी नहीं कर सकता लेकिन प्यार तो कर सकता हूँ न। वह सपना को पत्नी का दर्जा नही देता और नीलू से संबंध बनाये रखता है। उसकी हरकतों से उबकर सपना तलाक लेकर कही दूर चली जाती है पर मायके नहीं जाती। उसको पता है मायके में उसको समझने वाला कोई नही है। जो लोग ऐसी मान्यता रखते हैं कि बेटी की डोली मायके से उठती हैं और अर्थी ससुराल से, फिर चाहे किसी भी हालत में हो उनसे कोई मतलब नहीं होता। वह क्या बेटी को समझेंगे। वह दिल्ली में अकेले नोकरी कर जीवन जीती हैं, उसके सपनों का कुतुबमीनार

ढह जाता हैं। किंतु हमारे संकुचित समाज नौकरी कर अकेला रहना भी स्वीकार नहीं करता है। 'भाग्य' कहानी में मृत्यु के पश्चात की घटना को उजागर किया गया है। माँ की मृत्यु के बाद घर में रोने के लिए बेटियों को याद किया जाता है। यहाँ संबंधों में आये हृदयहीनता को प्रस्तुत किया है। सास की मृत्यु के पश्चात बहु-बेटो की आँखों से दुःख के आँसू तक नहीं आते, तो लोग कहते है कि भगवान ने इतने बेटो की जगह एक बेटा कम दिया होता और उसकी जगह एक बेटी देता तो कम से कम माँ की मृत्यु पर वह बिलख-बिलख कर रोती तो सही, यहाँ तो लगता ही नहीं, किसी की मृत्यु भी हुई हैं। मेहरुन्निसा परवेज़ ने प्रस्तुत किया है कि लड़कियों हिस्से में सिर्फ आँसुओं की जायदाद ही आती हैं। 'ओस में डूबा गुलाब', 'सिर्फ एक आदमी', 'कयामत आ गई है', 'अपनी जमीन', 'नंगी आँखोंवाला रेगिस्तान', 'टूटने से पहले', 'हत्या एक दोपहर की', 'देहरी की खातिर', 'फाल्गुनी', 'उसका घर', 'आकाशनील', आदि कहानियाँ मेहरुन्निसा परवेज़ के अन्य कहानी संग्रहो में प्रकाशित हो चुकी हैं।

अम्मा (सन् 1997)

इस कहानी संग्रह में नौ कहानियाँ संग्रहीत है। जो मातृ प्रेम को दर्शाती हैं। परिवार में स्त्री का स्थान एक माँ के रुप में, एक पत्नी के रूप में, एक बहन के रूप में कितना महत्वपूर्ण है इसका यथार्थ चित्रण किया गया है। नारी के बिना घर किस प्रकार बिखर जाता हैं और फिर उसको समेट पाना किसी के बस में नहीं होता। इस कहानी संग्रह को लेखिका ने अपनी माँ को समर्पित किया है। वह कहती हैं कि नारी के रूप में पहले मैं ने अपनी माँ को देखा और समझा था, और उन्हें सामने रखकर नारी के विभिन्न स्वरूपों का सर्जन किया है। 'अम्मा' कहानी में चित्रित किया गया है कि माँ का होना बेटियों के लिए कितना जरूरी होता है, इस बात को स्पस्ट किया है। कहानी की नायिका सुमन अपने तिरस्कृत जीवन जीने के लिए विवश हैं। जब तक माँ जिंदा थी तब तक पति भी संस्कारी दामाद और पति बनने का ढोंग करता था। जीजाजी भी शोभा दीदी के मृत्यु के पश्चात, माँ के जीते-जी दूसरी शादी करने का साहस नही जुटापाये थे। माँ की मृत्यु के बाद तीनों

बहनों का संसार बिखर जाता हैं। 'सजा' इस कहानी में मेहरुनिस्सा परवेज़ जी ने अंतरजातीय विवाह तथा माता-पिता के स्वार्थ को दिखाया है। उमा का ब्याह ना होने के कारण मजबूरन उसे अपनी पढ़ाई जारी रखनी पड़ती हैं। माता-पिता उसका ब्याह जल्दी करना चाहते थे लेकिन कोई रिश्ता आता तो मुँह खोलकर दहेज मांगता और बात वही दब जाती। उमा एम.ए करने के बाद ब्याह के लिए दो साल इंतजार किया, बाद में पिता को मनाकर बैंक में नौकरी कर लेती हैं। नौकरी करते ही घर की काया ही बदल जाती है, घर मे सोफा, फर्नीचर, फ्रीज सब आ जाता है। पिता को महीने में तीन हजार लाकर देती तो पिता के खुशी का ठिकाना नही होता। अब माता पिता भी उमा के ब्याह की चर्चा करना बंद कर देते हैं। एक दिन अपनी माँ से बताती हैं कि मैं एक लड़के से प्रेम करती हूँ, और ब्याह करना चाहती हूँ। पर घर मे उसकी बात को नजर अंदाज किया गया, इसलिए वह अपनी मर्जी से अंतरजातीय विवाह कर लेती है। उसी दिन से वह अपने माता-पिता के लिए मर जाती हैं। 'लौट जाओ बाबूजी' कहानी की नायिका शालू अपने पिता का अपमान सह नहीं पाती। समाज कितना भी आधुनिक क्यों ना हो जाये, लेकिन आज भी लड़के वालों के सामने लड़की वालों को झुकना ही पड़ता हैं। शालू, गिरीश से प्रेम विवाह करती है। शालू के बाबूजी प्रगतिशील विचारों वाले व्यक्ति थे, इसलिए शालू प्रेम विवाह करने की हिम्मत जुटा पाती हैं, क्योंकि वह जानती थी कि उसके बाबूजी उसे इसबात के लिए माफ कर देंगे। जब वह शालू के घर उसके ससुराल उससे मिलने आते है, उसके अनपढ़ ससुर, उसके पढ़े लिखे उची पद पर कार्य करने वाले बाबूजी का अपमान करते हैं। अपने बाबूजी को ससुर के सामने हाथ जोड़े खडा देख वह गुस्से से लाल हो जाती है और दिल पर पत्थर रखकर अपने बाबूजी को अपने घर से वापस जाने को कहती हैं, क्योंकि वह सब कुछ बर्दाश्त कर सकती हैं पर अपने बाबूजी का अपमान नहीं सह सकती। 'प्राण-प्रतिष्ठा' इस कहानी में लेखिका ने ऐसे महात्मा की चर्चा करती हैं, जो संसार को त्याग कर अपने पत्नी और बेटी को विपदा में छोड़ कर भाग जाता हैं। 'घूरे का बिरवा' एक गरीब माँ और उसके अपाहिज बच्चे की कहानी है। जो आर्थिक विपन्नता तथा घर

मे कोई कमाने वाला ना होने के कारण दिन-रात अपने अपाहिज बेटे को कोसती रहती हैं। 'पापा का घर' कहानी में माँ की मृत्यु के पश्चात, अधेड़ उम्र वाले पिता के पुनर्विवाह के दुष्परिणामों को दर्शाया हैं। जिसके कारण तीनों बच्चे माँ के साथ-साथ पिता से भी दूर हो जाते हैं। जिस घर की एक-एक ईट माँ ने अपने सामने रखी थी नयी माँ ने आकर सब कुछ बदल दिया था। अब तीनो बच्चे उस घर मे कभी नहीं जाते। 'निर्णय' कहानी में लेखिका ने ग्रामीण जीवन को दर्शाया हैं। मालविका अपना डिप्लोमा कोर्स पूरा करने गाँव आती हैं। गाँव के लोगों का अपनत्व, प्रेम, देखकर उसे ताज्जुब होता है वह सोचती है कि शहर के लोगों के पास सब कुछ है लेकिन फिर भी उनके दिल में किसी के लिए जगह नहीं होती। यहाँ लोगों के पास कुछ नही होते हुए भी सबके लिए कितना कुछ करने की भावना है। गाँव में स्त्रियों का जीवन सीमित है फिर भी उनमे दूसरों के लिए जीने की भावना है।'बूँद का हक' इसमें एक ऐसी पत्नी को दिखाया है जो अपने पति से प्रताड़ित होती हैं और एक दिन पति से तंग आकर अपने बेटी को छोड़कर मायके चली जाती है। लेकिन मायके में भी उसे कोई सहारा नही देता। माँ -भाई ने तो उससे बात करना ही बंद कर दिया था। पति राहुल का फोन आता है वह समझौता करना चाहता है तो वह अपनी बेटी के लिए समझौता करने को तैयार हो जाती हैं। कहानी में वात्सल्य की भावना को महत्व दिया गया है। 'अपने अपने लोग' कहानी में लेखिका ने हिन्दू-मुस्लिम परिवारिक की एकता को दिखाया गया है। साथ ही कामकाजी स्त्री के दोहरे शोषण की समस्या, अंतरजातीय विवाह की समस्या,वृद्ध व्यक्ति की समस्या, दहेज की समस्या, महानगरों की समस्या, ग्रामीण लोगों की समस्या, भ्रष्ट सरकारी व्यवस्था की समस्या आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की गयी हैं।

समर (सन् 2018)

इस कहानी संग्रह में छः कहानियाँ संग्रहीत की गई हैं। यह कहानी संग्रह मेहरुन्निसा परवेज़ ने अपने मृत बेटे की याद में लिखा है। इस कहानी संग्रह के माध्यम से लेखिका ने यह प्रस्तुत किया है कि जीवन एक समर हैं और उसे अंत तक लड़ना चाहिए। वह कहती हैं - " समर!

हमारे जीवन का समर दरअसल जीवन का दूसरा नाम ही समर है। जीवन के हर क्षण में, हर पड़ाव पर समर हमारे सामने होता है। निरंतर हम उसका सामना करते हैं, जूझते हैं, हारते हैं ; फिर रोते हैं, थकते हैं और फिर मुसकराने लगते हैं। छोटे-छोटे दुःखो में रो लेना और फिर बड़े दुःख में बस मुस्कुरा उठना, शायद इसी का नाम जीवन है।"[89]

'समर' बेटे की असमय मृत्यु के कारण एक दुःखी माँ की तड़प तथा बेटे की प्रेमिका नेहा की कहानी है। माँ के पास तो बेटे की यादें हैं लेकिन नेहा के पास तो कुछ नही था, वह नेहा से प्यार करता था और शादी करना चाहता था, नेहा समर की मृत्यु के पश्चात विधवा-सा जीवन जीती हैं। किसी अपने की अचानक मृत्यु से कैसे सब बिखर जाता हैं। लेखिका बताती हैं। "सारी उम्र मैंने जिंदगी से युद्ध किया था, पर अब नहीं। मैंने हार मान ली और अपने सारे हथियार नीचे रख दिए। मेरे जीवन का समर समाप्त हुआ, अब नेहा के जीवन का समर शुरू हो गया था अपने जीवन के समर को मैं नेहा की आँखों में पुनः जीवित होते देख रही थी।"[90] 'जगार' कहानी में लेखिका ने एक दलित स्त्री की चेतना को दिखाया है। साथ ही जमीदारों द्वारा गरीब लाचार लोगों पर अत्याचार की समस्या, दलित गरीब स्त्रियों का शोषण की समस्या आदि समस्या को दिखाया हैं। नारी अगर चाहे तो बड़े से बड़े शत्रु को कैसे हरा सकती हैं और अपने अन्यायों के खिलाफ लड़ने के लिए खुद को कैसे स्क्षम बनाती हैं। इस पर परवेज़ जी ने प्रकाश डाला है। 'खेलावड़ी' इस कहानी में लेखिका ने वेश्या जीवन की त्रासदी को प्रस्तुत किया है । खेलावड़ी अर्थात धंधेवाली। ठाकुर उमेर सिंह और पत्नी रूपकुँवर बाई दोनों की कोई औलाद नहीं थी। ठाकुर उमेर सिंह को खानदानी शक्कर की बीमारी थी। ठाकुर जी ने एक दिन लालमणि को मेले में देखा तो उसके रूप के कायल होगये और उसे बगवाली कोठी में रखते हैं, वहाँ के सभी लोग उसे छोटी ठकुराइन बुलाते है । लालमणि से ठाकुर को एक पुत्र होता हैं । ठाकुर की मृत्यु के पश्चात लालमणि सब को बताती हैं, कि ठाकुर साहब निःसन्तान नही थे, यह सब को बताती हैं। पर कोई एक खेलावड़ी की बात मानने को तैयार नहीं होता, लोग उसका मजाक उड़ाते हैं की एक

ठाकुर का वारिस क्या किसी खेलावड़ी की कोख से जन्म लेगा। मालकिन अपने भाई के बेटे को गोद लेती हैं। कहानी में लेखिका ने जमींदारों के घरों व्याप्त षडयंत्रो, झूटी शान-शौक़त, प्रतिष्ठा को दिखाया है। 'सूकी बयड़ी' कहानी में लेखिका ने आदिवासी लोगों की गरीबी तथा असर्मथता को प्रस्तुत किया है। निमड़ा के तीन बेटियाँ और एक बेटा है। निमड़ा अपने दो बेटियों का ब्याह तय करता है। उसके लिए उसके पास पैसे नहीं है। इसलिए वह अपने एक लौते बेटे टेसूआ को एक हजार के बदले, दो साल के लिए सेठ दाँगीलाल के यहाँ बंधुआ मजदूर बना देता है । सेठ दाँगीलाल समाज में इज्जतदार व्यक्ति हैं। लेकिन वह चोरी, डकैती, कत्ल और खून जैसे काम वह इन बेबस लाचार अबोध बालको से करवाता है, इन्ही कामों से वह धनी आदमी बना था। जो काम करने से इंकार कर देता है तो उसे वह प्रताड़ित करता है। साथ ही नारी जीवन के विविध आयामों तथा उपेक्षित लोगों के संघर्ष को चित्रित किया है। 'घूरे का बिरवा' यह कहानी अन्य कहानी संग्रह में संग्रहित हो चुकी हैं। इस कहानी संग्रह की सभी कहानियों में लेखिका ने निर्धन तथा अत्याचार से ग्रसित लोगो के जीवन को प्रस्तुत किया हैं। लेकिन वे अपने जीवन से हार ना मानकर निरंतर द्वंद करते हैं, और कामयाब भी होते हैं। सभी कहानियों में लेखिका ने सकारात्मक दृष्टिकोण चित्रित किया है।

लाल गुलाब (सन् 2006)

इस कहानी संग्रह के अंतर्गत सात कहानियाँ संग्रहीत की गई है। इसमें माँ की ममता, प्रेम,त्याग, बलिदान, समर्पण तथा जीवन की सत्यता का उद्घाटित किया है। 'लाल गुलाम' कहानी लेखिका ने अपने स्वर्गीय बेटे की याद में लिखा है। बेटे समर के प्रति स्मरण और विराट दुःख को प्रकट करती हैं। साथ ही किशोरावस्था के निर्मल प्रेम भावना और 'लाल गुलाब' एक पतिक के रुप में किस प्रकार अपने अधिकारों की पुष्टि करता है, और बड़े ही संवेदनशीलता से इस कहानी में दर्शाया गया है। 'कोई नहीं' – कहानी में लेखिका ने प्रगतिशील नारी का वर्णन कियाअ है। स्वावलंबी होने के कारण आज नारी अपने अधिकारों की मांग करने लगी है। शुभदा एक ऐसी

नारी का उदाहरण हैं। विवेक द्वारा अपमानित होने के बाद उसे अहसास होता है, कि दूसरी पत्नी होना कितने दुर्भाग्य की बात होती है। वह माँ बनने वाली है उसके बावजूद पति को बिना बताये अपने सहेली के पास मद्रास जाकर अपने बेटे की परवरिश अकेले करती हैं। 'बड़े लोग' यह कहानी गरीब और अमीर की आर्थिक भिन्नता को दर्शाती हैं। किस प्रकार से बड़े महेलवाले अपने बंगले, कोठी के आस-पास के झोपड़े-झोपड़ियों को पैसे के दम पर या जोर जबरजस्ती से हटवाते है ऐसी दुःखद परिस्थितियों को चित्रित किया है। 'अपने होने का अहसास' अपने ही घर में अपने अस्तित्व को ढूँढ़ती नारी की कहानी है। जो अपने ही पति द्वारा अपमानित, प्रताड़ित, शोषित होती। वह हमेशा प्रेम भावना, अपने पन की अभिलाषा को तरसती नारी का अंकन बहुत ही सूक्ष्म दृस्टि से प्रस्तुत किया गया है। 'जीवन मंथन' स्त्री जीवन की पल-पल बदलती जिंदगी की कहानी है। नंदिता शादी से पहले आत्मनिर्भर रहना चाहती थी,लेकिन शादी के बाद पति और ससुराल वालों की पसंद नापसंद से रहना पड़ता है। जिस अमित के साथ प्यार करके ब्याह के आई थी, क्या पता था कि वह सिर्फ जिस्म से प्यार करता है। चाहे फिर वह किसी का भी हो, किन्तु नंदिता तीन वर्ष में विधवा हो जाती है उसका बेटा नमित पांच साल का है। ससुराल वाले उसपर भी अपना पूरा कब्जा करके रखते है, और नंदिता के पास भी आने नहीं देते। ऐसे में उसका कॉलेज का दोस्त महेश उससे शादी करने के लिए हाथ बढ़ाता है। कहानी में नारी जीवन में नया विकल्प प्रस्तुत होता है। 'जगार', 'हत्या एक दोपहर की' आदि कहानियाँ अन्य कहानी संग्रहों में प्रकाशित हो चुकी हैं। इस कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ स्त्री को उसके अधिकारों से महरूम कर दिया गया और उसपर अत्याचार, ज्यादती करते रहते है और पुरषों की मतलबी मनोवृत्ति को दर्शाया गया है।

मेरी बस्तर की कहानियाँ (सन् 2006)

यह मेहरुन्निसा परवेज़ का आखरी प्रकाशित कहानी संग्रह है । इस कहानी की तकरीबन सभी कहानियाँ बस्तर के आदिवासी जन-जीवन पर आधारित है। बस्तर के ग्रामीण लोगों में

व्याप्त अंधविश्वास, उनकी संस्कृति, दुःख, निर्धनता, उनके द्वंद्व तथा रूढ़ि वादी परंपरा का मार्मिक चित्रण किया है। मेहरुन्निसा परवेज़ जी का जीवन बस्तर के लोगों के इर्द- गिर्द बिता है इसलिए वह इन्हें भलि भाँति समझती हैं। ये सभी कहानियाँ प्रेम, दाम्पत्य जीवन में कलह तथा नारी जीवन के अनगिनत आयामों को प्रस्तुत करता है । इस कहानी संग्रह की कहानिया इस प्रकार हैं - 'कनीबाट', 'टोना', 'शनाख्त', 'अयोध्या से वापसी', 'जुगनू', 'फाल्गुनी', 'ओस में डूबा गुलाब', 'देहरी के खातिर',

'रेगिस्तान', कयामत आ गई', 'आतंक भरा सुख', 'नया घर', दूसरी अर्थी', 'रिश्ते', 'पितृशोक', 'त्योहार', 'पत्थर वाली गली', 'नंगी टहनियाँ', 'भोगे हुए दिन', 'पाँचवीं कब्र', 'सिर्फ एक आदमी', 'जाने कब', 'जंगली हिरनी','चमड़े की खोल' इस कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ मेहरुन्निसा परवेज़ के अन्य कहानी संग्रह में प्रकाशित हो चुकी हैं।

निष्कर्ष

मेहरुन्निशा परवेज जी ने अपनी करुणा, संवेदनाओं को अपने कथा साहित्य के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाने का सार्थक प्रयत्न किया है। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व एक दूसरे के पूरक हैं। उन्होंने ने अपने तजुर्बों से अपने साहित्य का गठन किया है। इसी कारण से उनकी कहानियों में प्रसांगिक बहुलता देखने को नहीं मिलती। उन्होंने अपने साहित्य में बस्तर जिले के कस्बों के परिवार में व्याप्त दरिद्रता, वेदना, उत्पीड़न, मजबूरियां और स्वार्थ आदि को विस्तार से उद्घाटित किया है। बस्तर के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जानकारी उनके साहित्य में परिलक्षित होती है। उनके कथा-साहित्य में परिवारिक बिखराव, मुस्लिम परिवारों की परेशानिया, आर्थिक दरिद्रता, नारी के बदलते रूप, प्रेम के प्रति बदलता नजरिया, विवाहेतर संबंध, पुनर्विवाह की मुश्किलें, ठंडा दाम्पत्य जीवन, कुँवारी माँ की जिल्लत, कुँवारी कामकाजी नारी की मजबूरियाँ, विधवा नारी की वेदना, बाँझ नारी की छटपटाहट और ब्याहता की समस्या, धार्मिक मान्यताएँ, अंधविश्वास, समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, बेकारी आदि विभिन्न विषयों को

उन्होंने बड़ी गहराई और संवेदनशीलता से अपने साहित्य में उजागर किया है। भले ही उनकी कहानियों, उपन्यासों में विषय की पुनरावृत्ति हुई हो लेकिन ये विषय समय की दृष्टि से उपयुक्त है जो आज के समाज को प्रेरित करते हैं। इस प्रकार कई विषयों को लेकर लिखा गया विस्तृत साहित्य समाज के शोषित, कामजोर, लाचार लोगों के प्रति भावता सहृदय को प्रस्तुत करता है। उन्होंने किताबें पढ़कर ज्ञान अर्जित नहीं किया बल्कि उनका साहित्य उनके जीवन के प्रामाणिक अनुभूतियों का निचोड़ है। परवेज़ जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व का निरीक्षण करने पर हम कह सकते हैं उनके दोनों पक्षों का आपस में अटूट रिश्ता है।

संदर्भ

1. मेहरुन्निशा परवेज़ - समरलोक पत्रिका, अप्रैल-जून, 2011 - पृ. 4
2. डॉ. आर.एस जगताप - मेहरुन्निशा परवेज के कथा साहित्य में नारी – विद्या प्रकाशान, प्रथम सं. 2010 - पृ. 10
3. डॉ. दिनेश पाल - मेहरुन्निशा परवेज का कथा साहित्य – विकास प्रकाशान, प्रथम सं. 2010 - पृ. 47
4. डॉ. आर.एस जगताप - मेहरुन्निशा परवेज के कथा साहित्य में नारी - विद्या प्रकाशान, प्रथम सं. 2010 - पृ. 10
5. डॉ. दिनेश पाल - मेहरुन्निशा परवेज का कथा - विकास प्रकाशान, प्रथम सं. 2010 - पृ. 47
6. डॉ. आर.एस जगताप - मेहरुन्निशा परवेज के कथा साहित्य में नारी - विद्या प्रकाशान, प्रथम सं. 2010 - पृ. 11
7. वही - पृ. 12
8. ऋतुचक्र, मार्च-जून 1989, लेखिका का वक्तव्य, शीर्षक "मुझें माँ से मिली दर्द की पहचान" - पृ. 55
9. मेहरुन्निशा परवेज - समरलोक पत्रिका, जुलाई-सितंबर, 2011 - पृ. 4
10. मेहरुन्निशा परवेज - सारिक पत्रिका, अक्टूबर 1992 - पृ. 22

11. डॉ. दिनेश पाल - मेहरुन्निशा परवेज का कथा - विकास प्रकाशान, प्रथम सं. 2010 - पृ. 51

12. भीष्म साहनी - मेहरुन्निशा परवेज, आँखों की दहलीज: संस्मरण, आधुनिक हिन्दी उपन्यास – रचना प्रकाशन इलाहाबाद, 1972 - पृ. 422

13. दिनेश द्विवेदी - पुनश्च पत्रिका – विशेषांक, 2005 - पृ. 81

14. डॉ. दिनेश पाल - मेहरुन्निशा परवेज का कथा साहित्य - विकास प्रकाशान, प्रथम सं. 2010 - पृ. 52

15. पी.डी पाठक - Driver Dictionary, शिक्षा मनोविज्ञान - विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1982 - पृ. 208

16. डॉ. मीना जोशी - प्रतिनिधि महिला कहानीकारों में चित्रित नारी – शैलजा प्रकाशन, कानपुर 2008 - पृ. 51

17. दिनेश द्विवेदी - पुनश्च पत्रिका - विशेषांक, 2005 - पृ. 2

18. डॉ. आर.एस जगताप - मेहरुन्निशा परवेज के कथा साहित्य में नारी - विद्या प्रकाशान, प्रथम सं. 2010 - पृ. 1

19. कथा लेखिका मेहरुन्निशा परवेज से बिनय राजाराम की बात चीत, दिसंबर, 2005 - पृ. 24

20. दिनेश द्विवेदी - पुनश्च पत्रिका - विशेषांक, 2005 पृ.132

21. दिनेश द्विवेदी - पुनश्च पत्रिका की भूमिका से - विशेषांक, 2005 पृ. 4

22. दिनेश द्विवेदी - पुनश्च पत्रिका - विशेषांक, 2005 पृ.132

23. मेहरुन्निशा परवेज - समरलोक पत्रिका, जनवरी-मार्च, 2011 - पृ. 3

24. वही - पृ. 3

25. शोधार्थी को दिये गए साक्षात्कार से, 6 सितंबर, 2011

26. मेहरुन्निशा परवेज़ - समरलोक पत्रिका, अप्रैल-जून, 2011 - पृ. 3,4

27. संपा दिनेश द्विवेदी - पुनश्च पत्रिका - पृ. 113

28. वही - पृ. 84

29. वही - पृ. 86

30. वही - पृ. 80

31. संपा, शैलेन्द्र कुमार 'शैली' - राग भोपाली पत्रिका – दिसम्बर, 2001 पृ.5

32. डॉ. नीहार गीते - स्वतंत्र्योत्तर महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में यथार्थ के विविध रूप – पंचशील प्रकाशन, जयपुर, सं. 1996 - पृ. 103

33. मेहरुन्निशा परवेज - समरलोक, अंक जनवरी-मार्च, 2005 - पृ. 4

34. तसनीम पटेल - समय के साक्षी-मुस्लिम उपन्यासकार - आशीष प्रकाशन, मानसरोवर कालेज गोपाल ताकीज, सं. 2011- पृ. 91

35. मेहरुन्निशा परवेज - आँखों की दहलीज – प्रतिस्थान प्रकाशन नई दिल्ली, सं., 1992 - पृ. 7

36. वही - 7

37. वही - 95

38. वही - 83

39. वही - 83

40. वही - 85

41. वही - 101

42. वही - 130

43. डॉ. आर.एस जगताप - मेहरुन्निशा परवेज के कथा साहित्य में नारी - विद्या प्रकाशान, प्रथम सं. 2010 - पृ.

44. पुश्च्न पत्रिका विशेषांक में डॉ. मिनी सामुअल के एक लेख से - पृ. 47

45. डॉ. घनश्याम 'मधुप' - हिंदी लघु उपन्यास - राधाकृष्ण प्रकाशन अंसारी रोड दरियागंज, दिल्ली - 1971 - पृ. 29,30

46. डॉ. नीहार गीते - स्वतंत्र्योत्तर महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में यथार्थ के विविध रूप - पंचशील प्रकाशन, जयपुर, सं. 1996 - पृ. 104

47. वही पृ. 105,106

48. मेहरुन्निशा परवेज - उसका घर - नेशनल पब्लिकेशन हाउस 23, प्रकाशन दरियागंज दिल्ली प्रथम सं. 1972 - पृ. 5

49. वही - पृ. 82

50. वही - पृ. 73

51. डॉ. रामदरश मिश्र - आज का हिंदी साहित्य: संवेदना और दृस्टि – अभिनव प्रकाशन दिल्ली, सं. 1975 - पृ. 133,134,

52. मेहरुन्निशा परवेज़ - कोरजा – वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, सं. 2000 - पृ. 171

53. वही - पृ. 18

54. वही - पृ. 19

55. मेहरुन्निशा परवेज़ - कोरजा - वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, सं. 2000 - पृ. 95

56. वही - पृ. 95

57. डॉ. शील प्रभा वर्मा - महिला उपन्यासकारों की अचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ - पृ. 75,76

58. मेहरुन्निशा परवेज़ - कोरजा - वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, सं. 2000 - पृ. 160

59. वही - पृ. 196

60. वही - पृ. 229

61. वही - पृ. 231

62. डॉ. शील प्रभा वर्मा - महिला उपन्यासकारों की अचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ - पृ. 26

63. मेहरुन्निशा परवेज - अकेला पलाश - वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, सं. 2002 - पृ. 81

64. वही - पृ. 28

65. वही - पृ. 101

66. वही - पृ. 102

67. वही - पृ. 63

68. वही - पृ. 65

69. वही - पृ. 65

70. मेहरुन्निशा परवेज - अकेला पलाश - वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, सं. 2002 - पृ. 137

71. वही - 219

72. मेहरुन्निशा परवेज़ के पासंग उपन्यास के मुख पृष्ठ से - वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, सं. 2004.

73. मेहरुन्निशा परवेज़ - पासंग - वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, सं. 2004 - पृ. 80

74. वही - पृ. 45

75. वही - पृ. 308

76. वही - पृ. 370

77. वही - पृ. 375

78. वही - पृ. 377

79. संपा. दिनेश द्विवेदी - पुनश्च पत्रिका - विशेषांक, 2005 - पृ. 54

80. मेहरुन्निशा परवेज़ - समरांगण - वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली, सं. 2002 - पृ. 193

81. वही - पृ. 201

82. शोधार्थी को दिए साक्षात्कार से - 7 सितंबर, 2011

83. डॉ. दीपिका रानी - हिंदी कहानी और मुस्लिम सामाज – संजय प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली,सं. 2009 - पृ. 91

84. डॉ. नीहार गीते - स्वतंत्र्योत्तर महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में यथार्थ के विविध रूप - पंचशील प्रकाशन, जयपुर, सं. 1996 - पृ. 103

85. डॉ. मंजु शर्मा - साठोत्तरी महिला कहानीकार -एम. एम. एस. हाईवे, जयपुर, सं. 1986 - पृ. 96

86. डॉ. मालती आदवानी - लेखिकाओं के नार्वे दशक की हिंदी कहानियों में पारिवारिक संबंध – सार्थक प्रकाशन नई दिल्ली, सं. 1999 - पृ. 86

87. डॉ. मीना जोशी - प्रतिनिधि महिला कहानीकारों में चित्रित नारी - शैलजा प्रकाशन, कानपुर 2008 - पृ. 44

88. मेहरुन्निशा परवेज - रिश्ते, कहानी संग्रह में (अपनी बात) से – आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली सं. 1992.

89. मेहरुन्निशा परवेज - समर, कहानी संग्रह में (मेरी बात) से - ग्रंथ अकादमी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018

90. मेहरुन्निशा परवेज - समर – ग्रंथ अकादमी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2018 - पृ.19